आयातुहा 30 | 67 सूरतुल मुल्क मक्किय्यतुन 77 | रुकूआ़तुहा 2

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहयात मेहरबान हमेशा रहम फरमाने वाला है।

تَبٰرَكَ الَّذِيْ بِيَدِهِ الْمُلْكُ ۫ وَ هُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرُ ۙ۝١

1. वोह ज़ात निहायत बा बरकत है जिसके दस्ते (कुदरत) में (तमाम जहानों की) सल्तनत है, और वोह हर चीज़ पर क़ादिर है।

الَّذِيْ خَلَقَ الْمَوْتَ وَ الْحَيٰوةَ لِيَبْلُوَكُمْ اَيُّكُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ؕ وَ هُوَ الْعَزِيْزُ الْغَفُوْرُ ۙ۝٢

2. जिसने मौत और ज़िन्दगी को (इस लिए) पैदा फ़रमाया कि वोह तुम्हें आज़माए कि तुम में से कौन अ़मल के लिहाज़ से बेहतर है, और वोह ग़ालिब है बड़ा बख़्शनेवाला है।

الَّذِيْ خَلَقَ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا ؕ مَا تَرٰى فِيْ خَلْقِ الرَّحْمٰنِ مِنْ تَفٰوُتٍ ؕ فَارْجِعِ الْبَصَرَ ۙ هَلْ تَرٰى مِنْ فُطُوْرٍ ۝٣

3. जिसमें सात (या मु-तअ़द्दिद) आस्मानी कुर्रे बाहमी मुताबिक़त के साथ (तबक़ दर तबक़) पैदा फ़रमाए, तुम अ़दमे तनासुब नहीं देखोगे, सो तुम निगाहे (ग़ौरो फ़िक्र) फेर कर देखो, क्या तुम इस (तख़्लीक़) में कोई शिगाफ़ या ख़लल (या'नी शिकस्तगी या इन्क़िताअ़) देखते हो।

ثُمَّ ارْجِعِ الْبَصَرَ كَرَّتَيْنِ يَنْقَلِبْ اِلَيْكَ الْبَصَرُ خَاسِئًا وَّ هُوَ حَسِيْرٌ ۝٤

4. फिर तुम निगाहे (तह़क़ीक़) को बार बार (मुख़्तलिफ़ ज़ाविय़ों और साइन्सी तरीक़ों) से फेर कर देखो, (हर बार) नज़र तुम्हारी तरफ़ थक कर पलट आएगी, और वोह (कोई भी नुक़्स तलाश करने में) नाकाम होगी।

وَ لَقَدْ زَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيْحَ وَ جَعَلْنٰهَا رُجُوْمًا لِّلشَّيٰطِيْنِ وَ اَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابَ السَّعِيْرِ ۝٥

5. और बेशक हमने सबसे क़रीबी आस्मानी काइनात को (सितारों, सय्यारों, दीगर ख़लाई कुर्रों और ज़र्रों की शक्ल में) चराग़ों से मुज़य्यन फ़रमा दिया है, और हमने (उन्ही में से बा'ज़) को शैतानों (या'नी सरकश क़ुव्वतों) को मार भगाने का (या'नी उनके मनफ़ी असरात ख़त्म करने) का ज़रीआ़ (भी) बनाया है, और हमने उन (शैतानों) के लिए दहक्ती आग का अज़ाब तैयार कर रखखा है।

وَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ عَذَابُ
جَهَنَّمَ ؕ وَ بِئْسَ الْمَصِيْرُ ٦

6. और ऐसे लोगों के लिए जिन्होंने अपने रब का इन्कार किया दोज़ख का अ़ज़ाब है, और वोह किया ही बुरा ठिकाना है।

اِذَآ اُلْقُوْا فِيْهَا سَمِعُوْا لَهَا شَهِيْقًا
وَّ هِيَ تَفُوْرُ ۙ ٧

7. जब वोह उसमें डाले जाएंगे तो उसकी ख़ौफ़नाक आवाज़ सुनेंगे और वोह (आग) जोश मार रही होगी।

تَكَادُ تَمَيَّزُ مِنَ الْغَيْظِ ؕ كُلَّمَاۤ اُلْقِيَ
فِيْهَا فَوْجٌ سَاَلَهُمْ خَزَنَتُهَاۤ اَلَمْ
يَاْتِكُمْ نَذِيْرٌ ٨

8. गोया (अभी) शिद्दते ग़ज़ब से फट कर पारह पारह हो जाएगी, जब उसमें कोई गिरोह डाला जाएगा तो उसके दारोग़े उनसे पूछेंगे : क्या तुम्हारे पास कोई डर सुनानेवाला नहीं आया था ?

قَالُوْا بَلٰى قَدْ جَآءَنَا نَذِيْرٌ ۙ۬ فَكَذَّبْنَا
وَ قُلْنَا مَا نَزَّلَ اللّٰهُ مِنْ شَيْءٍ ۖۚ اِنْ
اَنْتُمْ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ كَبِيْرٍ ٩

9. वोह कहेंगे : क्यों नहीं ! बेशक हमारे पास डर सुनानेवाला आया था तो हमने झुटला दिया और हमने कहा कि अल्लाहने कोई चीज़ नाज़िल नहीं की, तुम तो महज़ बड़ी गुमराही में (पड़े हुए) हो।

وَ قَالُوْا لَوْ كُنَّا نَسْمَعُ اَوْ نَعْقِلُ مَا
كُنَّا فِيْۤ اَصْحٰبِ السَّعِيْرِ ١٠

10. और कहेंगे : अगर हम (ह़क़ को) सुनते या समझते होते तो हम (आज) अहले जहन्नम में (शामिल) न होते।

فَاعْتَرَفُوْا بِذَنْۢبِهِمْ ۚ فَسُحْقًا لِّاَصْحٰبِ
السَّعِيْرِ ١١

11. पस वोह लोग अपने गुनाह का ए'तिराफ़ कर लेंगे, सो दोज़ख़वालों के लिए (रह़मते इलाही से) दूरी (मुक़र्रर) है।

اِنَّ الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ
لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّ اَجْرٌ كَبِيْرٌ ١٢

12. बेशक जो लोग बिन देखे अपने रब से डरते हैं उनके लिए बख़्शिश और बड़ा अज्र है।

وَ اَسِرُّوْا قَوْلَكُمْ اَوِ اجْهَرُوْا بِهٖ ؕ
اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ١٣

13. और तुम लोग अपनी बात छुपा कर कहो या उसे बुलन्द आवाज़ में कहो, यक़ीनन वोह सीनों की (छुपी) बातों को (भी) खूब जानता है।

اَلَا يَعْلَمُ مَنْ خَلَقَ ؕ وَ هُوَ اللَّطِيْفُ
الْخَبِيْرُ ١٤ ع

14. भला वोह नहीं जानता जिसने पैदा किया है ? हालांकि वोह बड़ा बारीक बीन (हर चीज़से) ख़बरदार है।

هُوَ الَّذِیۡ جَعَلَ لَکُمُ الۡاَرۡضَ
ذَلُوۡلًا فَامۡشُوۡا فِیۡ مَنَاکِبِهَا وَ کُلُوۡا
مِنۡ رِّزۡقِهٖ ؕ وَ اِلَیۡهِ النُّشُوۡرُ ﴿۱۵﴾

15. वोही है जिसने तुम्हारे लिए ज़मीन को नर्मो मुसख़्ख़र कर दिया, सो तुम उसके रास्ते में चलो फिरो, और उसके (दिए हुए) रिज़्क़ में से खाओ, और उसी की तरफ़ (मरने के बा'द) उठ कर जाना है।

ءَاَمِنۡتُمۡ مَّنۡ فِی السَّمَآءِ اَنۡ یَّخۡسِفَ
بِکُمُ الۡاَرۡضَ فَاِذَا هِیَ تَمُوۡرُ ﴿ۙ۱۶﴾

16. क्या तुम आस्मानवाले (रब) से बे ख़ौफ़ हो गए हो कि वोह तुम्हें ज़मीन में धंसा दे (इस तरह) कि वोह अचानक लरज़ने लगे।

اَمۡ اَمِنۡتُمۡ مَّنۡ فِی السَّمَآءِ اَنۡ یُّرۡسِلَ
عَلَیۡکُمۡ حَاصِبًا ؕ فَسَتَعۡلَمُوۡنَ کَیۡفَ
نَذِیۡرِ ﴿۱۷﴾

17. क्या तुम आस्मानवाले (रब) से बे ख़ौफ़ हो गए हो कि वोह तुम पर पथ्थर बरसानेवाली हवा भेज दे? सो तुम अ़नक़रीब जान लोगे कि मेरा डराना कैसा है।

وَ لَقَدۡ کَذَّبَ الَّذِیۡنَ مِنۡ قَبۡلِهِمۡ
فَکَیۡفَ کَانَ نَکِیۡرِ ﴿۱۸﴾

18. और बेशक उन लोगों ने (भी) झुटलाया था जो उन से पेहले थे, सो मेरा इन्कार कैसा (इब्रतनाक) साबित हुआ।

اَوَ لَمۡ یَرَوۡا اِلَی الطَّیۡرِ فَوۡقَهُمۡ صٰٓفّٰتٍ
وَّ یَقۡبِضۡنَ ؕۘ مَا یُمۡسِکُهُنَّ اِلَّا
الرَّحۡمٰنُ ؕ اِنَّهٗ بِکُلِّ شَیۡءٍۭ بَصِیۡرٌ ﴿۱۹﴾

19. क्या उन्होंने परिन्दों को अपने ऊपर पर फैलाए हुए और (कभी) पर समेटे हुए नहीं देखा? (उन्हें फ़िज़ा में गिरने से) कोई नहीं रोक सक्ता सिवाए रह़मान के (बनाए हुए क़ानून के) बेशक वोह हर चीज़ को ख़ूब जाननेवाला है।

وقف منزل
وقف غفران
وقف لازم
اختلافی

اَمَّنۡ هٰذَا الَّذِیۡ هُوَ جُنۡدٌ لَّکُمۡ
یَنۡصُرُکُمۡ مِّنۡ دُوۡنِ الرَّحۡمٰنِ ؕ اِنِ
الۡکٰفِرُوۡنَ اِلَّا فِیۡ غُرُوۡرٍ ﴿ۚ۲۰﴾

20. भला कोई ऐसा है जो तुम्हारी फ़ौज बन कर (ख़ुदाए) रह़मान के मुक़ाबले में तुम्हारी मदद करे? काफ़िर मह़ज़ धोके में (मुब्तिला) हैं।

اَمَّنۡ هٰذَا الَّذِیۡ یَرۡزُقُکُمۡ اِنۡ
اَمۡسَکَ رِزۡقَهٗ ۚ بَلۡ لَّجُّوۡا فِیۡ عُتُوٍّ وَّ
نُفُوۡرٍ ﴿۲۱﴾

21. भला कोई ऐसा है जो तुम्हें रिज़्क़ दे सके (अगर अल्लाह तुमसे) अपना रिज़्क़ रोक ले? बल्कि वोह सरकशी और (ह़क़ से नफ़रत) में मज़बूती से अड़े हुए हैं।

اَفَمَنْ يَّمْشِيْ مُكِبًّا عَلٰى وَجْهِهٖٓ اَهْدٰٓى اَمَّنْ يَّمْشِيْ سَوِيًّا عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٢٢﴾

22. क्या वोह शख़्स जो मुंह के बल औंधा चल रहा है ज़ियादह राहे रास्त पर है या वोह शख़्स जो सीधी हालत में सहीह राह पर गामज़न है।

قُلْ هُوَ الَّذِيْٓ اَنْشَاَكُمْ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَ الْاَبْصَارَ وَ الْاَفْـِٕدَةَ ؕ قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ﴿٢٣﴾

23. आप फ़रमा दीजिए : वोही (अल्लाह) है जिसने तुम्हें पैदा फ़रमाया और तुम्हारे लिए कान और आंखें और दिल बनो, तुम बहुत ही कम शुक्र अदा करते हो।

قُلْ هُوَ الَّذِيْ ذَرَاَكُمْ فِي الْاَرْضِ وَ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿٢٤﴾

24. फ़रमा दीजिए : वोही है जिसने तुम्हें ज़मीन में फैला दिया और तुम (रोज़े क़ियामत) उसी की तरफ़ जमा' किए जाओगे।

وَ يَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٢٥﴾

25. और वोह केहते हैं : (येह क़ियामत का) वा'दा कब पूरा होगा अगर तुम सच्चे हो।

قُلْ اِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللّٰهِ ۖ وَ اِنَّمَآ اَنَا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٢٦﴾

26. फ़रमा दीजिए कि (उसके वक़्त का) इल्म तो अल्लाह ही के पास है, और मैं तो सिर्फ़ वाज़ेह डर सुनानेवाला हूं (अगर वक़्त बता दिया जाए तो डर ख़त्म हो जाएगा)।

فَلَمَّا رَاَوْهُ زُلْفَةً سِيْٓـَٔتْ وُجُوْهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَ قِيْلَ هٰذَا الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تَدَّعُوْنَ ﴿٢٧﴾

27. फिर जब उस (दिन) को क़रीब देख लेंगे तो उन काफ़िरों के चेहरे बिगड़ कर सियाह हो जाएंगे, और (उनसे) कहा जाएगा : येही वोह (वा'दा) है जिसके (जल्द ज़ाहिर किए जाने के) तुम बहुत तलबगार थे।

قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَهْلَكَنِيَ اللّٰهُ وَ مَنْ مَّعِيَ اَوْ رَحِمَنَا ۙ فَمَنْ يُّجِيْرُ الْكٰفِرِيْنَ مِنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٢٨﴾

28. फ़रमा दीजिए : भला येह बताओ अगर अल्लाह मुझे मौत से हम किनार कर दे (जैसे तुम ख़्वाहिश करते हो) और जो मेरे साथ हैं (उनको भी) या हम पर रहम फ़रमाए (या'नी हमारी मौत को मुअख़्ख़र कर दे) तो (इन दोनों सूरतों में) कौन है जो काफ़िरों को दर्दनाक अज़ाब से पनाह देगा ?

قُلْ هُوَ الرَّحْمٰنُ اٰمَنَّا بِهٖ وَ عَلَيْهِ

29. फ़रमा दीजिए : वोही (ख़ुदाए) रहमान है जिस पर

تَوَكَّلْنَا ۚ فَسَتَعْلَمُوْنَ مَنْ هُوَ فِيْ
ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٢٩﴾

हम ईमान लाए हैं और हमने भरोसा किया है, पस तुम अ़नक़रीब जान लोगे कि कौन शख़्स खुली गुमराही में है।

قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَصْبَحَ مَآؤُكُمْ
غَوْرًا فَمَنْ يَّاْتِيْكُمْ بِمَآءٍ مَّعِيْنٍ ﴿٣٠﴾ ع

30. फ़रमा दीजिए : अगर तुम्हारा पानी ज़मीन में बहुत नीचे उतर जाए (या'नी ख़ुश्क हो जाए) तो कौन है जो तुम्हें (ज़मीन पर) बेहता हुआ पानी ला दे।

आयातुहा 52 | 68 सूरतुल क़-लमि मक्किय्यतुन 2 | रुकूआ़तुहा 2

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहयात महरबान हमेशा रह़म फ़रमानेवाला है।

نٓ وَالْقَلَمِ وَمَا يَسْطُرُوْنَ ۙ﴿١﴾

1. नून (ह़क़ीक़ी मा'ना अल्लाह और रसूल ﷺ ही बेहतर जानते हैं)। क़लम की क़सम और उस (मज़मून) की क़सम जो (फ़रिश्ते) लिखते हैं।

مَآ اَنْتَ بِنِعْمَةِ رَبِّكَ بِمَجْنُوْنٍ ۚ﴿٢﴾

2. (ऐ ह़बीबे मुकर्रम !) आप अपने रब के फ़ज़्ल से (हरगिज़) दीवाने नहीं हैं।

وَاِنَّ لَكَ لَاَجْرًا غَيْرَ مَمْنُوْنٍ ۚ﴿٣﴾

3. और बेशक आप के लिए ऐसा अज्र है जो कभी ख़त्म न होगा।

وَاِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِيْمٍ ﴿٤﴾

4. और बेशक आप अज़ीमुश्शान ख़ुल्क़ पर क़ाइम हैं (या'नी आदाबे क़ुरआनी से मुज़य्यन और अख़्लाक़े इलाहिय्या से मुत्तसिफ़ हैं)।

فَسَتُبْصِرُ وَيُبْصِرُوْنَ ۙ﴿٥﴾

5. पस अ़नक़रीब आप (भी) देख लेंगे और वोह (भी) देख लेंगे।

بِاَيِّيكُمُ الْمَفْتُوْنُ ﴿٦﴾

6. कि तुम में से कौन दीवाना है।

اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ
سَبِيْلِهٖ ۖ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ ﴿٧﴾

7. बेशक आपका रब (भी) उस शख़्स को ख़ूब जानता है जो उसकी राहसे भटक गया है, और वोह उनको (भी) ख़ूब जानता है जो हिदायत याफ़्ता हैं।

فَلَا تُطِعِ الْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٨﴾

8. सो आप झुटलानेवालों की बात न मानें।

وَدُّوْا لَوْ تُدْهِنُ فَيُدْهِنُوْنَ ﴿٩﴾

9. वोह तो चाहते हैं कि (दीन के मुआ़मले में) आप (बेजा) नरमी इख़्तियार कर लें तो वोह भी नर्म पड़ जाएंगे।

وَلَا تُطِعْ كُلَّ حَلَّافٍ مَّهِيْنٍ ﴿١٠﴾

10. और आप किसी ऐसे शख़्स की बात न मानें जो बहुत क़स्में खानेवाला इन्तिहाई ज़लील है।

هَمَّازٍ مَّشَّآءٍۭ بِنَمِيْمٍ ﴿١١﴾

11. (जो) ता'ना ज़न, ऐब जू, (है और) लोगों में फ़साद अंगेज़ी के लिए चुग़ल ख़ोरी करता फिरता है।

مَّنَّاعٍ لِّلْخَيْرِ مُعْتَدٍ اَثِيْمٍ ﴿١٢﴾

12. (जो) भलाई के काम से बहुत रोकनेवाला बख़ील, ह़द से बढ़नेवाला सरकश (और) सख़्त गुनाह़गार है।

عُتُلٍّۭ بَعْدَ ذٰلِكَ زَنِيْمٍ ﴿١٣﴾

13. (जो) बद मिज़ाज दुरुश्त ख़ू है, मज़ीद बर आं बद अस्ल (भी) है ★

اَنْ كَانَ ذَا مَالٍ وَّبَنِيْنَ ﴿١٤﴾

14. इस लिए (उसकी बात को अहमिय्यत न दें) कि वोह मालदार साह़िबे औलाद है।

اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِ اٰيٰتُنَا قَالَ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٥﴾

15. जब उस पर हमारी आयतें तिलावत की जाएं (तो) केहता है : येह (तो) पेहले लोगों के अफ़्साने हैं।

سَنَسِمُهٗ عَلَى الْخُرْطُوْمِ ﴿١٦﴾

16. अब हम उसकी सूंड जैसी नाक पर दाग़ देंगे।

اِنَّا بَلَوْنٰهُمْ كَمَا بَلَوْنَآ اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ ۚ اِذْ اَقْسَمُوْا لَيَصْرِمُنَّهَا مُصْبِحِيْنَ ﴿١٧﴾

17. बेशक हम उन (अहले मक्का) की (उसी तरह़) आज़माइश करेंगे जिस तरह हमने (यमन के) उन बाग़ वालों को आज़माया था जब उन्होंने क़सम खाई थी कि हम सुब्ह़ सवेरे यक़ीनन उसके फल को तोड़ लेंगे।

★ येह आयात वलीद बिन मुग़ीरह के बारे में नाज़िल हुईं, ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ عنہما फ़रमाते हैं कि जितने ज़िल्लत आमेज़ अल्क़ाब बारी तआ़लाने इस बद बख़्त को दिए आज तक कलामे इलाही में किसी और के लिए इस्ते'माल नहीं हुए,वजह येह थी कि उसने हुज़ूर नबिय्ये अकरम ﷺ की शाने अक़्दस में गुस्ताख़ी की, जिस पर ग़ज़बे इलाही भड़क उठ्ठा, वलीदने हुज़ूर नबिय्ये अकरम ﷺ की शान में गुस्ताख़ी का एक कलिमा बोला था, जवाबन बारी तआ़ला ने उसके दस रज़ाइल बयान किए और आख़िर में नुत्फ़ा ह़राम होना भी ज़ाहिर कर दिया, और उसकी मां ने बाद अज़ां इस अम्र की तस्दीक़ भी कर दी।(तफ़्सीरे क़ुर्तुबी,राज़ी,नस्फ़ी वग़ैरहा)

وَلَا يَسْتَثْنُوْنَ ﴿١٨﴾

18. और उन्होंने (इन शा अल्लाह केह कर या ग़रीबों के हिस्से) का इस्तिस्ना किया।

فَطَافَ عَلَيْهَا طَآئِفٌ مِّنْ رَّبِّكَ وَهُمْ نَآئِمُوْنَ ﴿١٩﴾

19. पस आपके रब की जानिब से एक फिरनेवाला अ़ज़ाब रात ही रात में उस (बाग़) पर फिर गया और वोह सोते ही रेह गए।

فَاَصْبَحَتْ كَالصَّرِيْمِ ﴿٢٠﴾ۙ

20. सो वोह लेहलहाता फलों से लदा हुआ बाग़ सुब्ह़ को कटी हुई खेती की तरह़ हो गया।

فَتَنَادَوْا مُصْبِحِيْنَ ﴿٢١﴾ۙ

21. फिर सुब्ह़ होते ही वोह एक दूसरे को पुकारने लगे।

اَنِ اغْدُوْا عَلٰى حَرْثِكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰرِمِيْنَ ﴿٢٢﴾

22. कि अपनी खेती पर सवेरे सवेरे चलो अगर तुम फल तोड़ना चाह़ते हो।

فَانْطَلَقُوْا وَهُمْ يَتَخَافَتُوْنَ ﴿٢٣﴾ۙ

23. सो वोह लोग चल पड़े और वोह आपस में चुपके चुपके केहते जाते थे।

اَنْ لَّا يَدْخُلَنَّهَا الْيَوْمَ عَلَيْكُمْ مِّسْكِيْنٌ ﴿٢٤﴾ۙ

24. कि आज उस बाग़ में तुम्हारे पास हरगगिज़ कोई मोह्ताज न आने पाए।

وَّغَدَوْا عَلٰى حَرْدٍ قٰدِرِيْنَ ﴿٢٥﴾

25. और वोह सुब्ह़ सवेरे (फल काटने और ग़रीबों को उनके हिस्से से मह़रूम करने के) मन्सूबे पर क़ादिर बनते हुए चल पड़े।

فَلَمَّا رَاَوْهَا قَالُوْٓا اِنَّا لَضَآلُّوْنَ ﴿٢٦﴾ۙ

26. फिर जब उन्होंने उस (वीरान बाग़) को देखा तो केहने लगे : हम यक़ीनन रास्ता भूल गए हैं (येह हमारा बाग़ नहीं है)।

بَلْ نَحْنُ مَحْرُوْمُوْنَ ﴿٢٧﴾

27. (जब ग़ौर से देखा तो पुकार उठे : नहीं नहीं) बल्कि हम तो मह़रूम हो गए हैं।

قَالَ اَوْسَطُهُمْ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ لَوْلَا تُسَبِّحُوْنَ ﴿٢٨﴾

28. उनके एक अ़द्ल पसंद ज़ीरक शख़्स ने कहा : क्या मैंने तुमसे नहीं कहा था कि तुम (अल्लाहका) ज़िक्रो तस्बीह़ क्यों नहीं करते।

قَالُوْا سُبْحٰنَ رَبِّنَآ اِنَّا كُنَّا
ظٰلِمِيْنَ ﴿۲۹﴾

29. (तब) वोह केहने लगे हमारा रब पाक है, बेशक हम ही ज़ालिम थे।

فَاَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ
يَّتَلَاوَمُوْنَ ﴿۳۰﴾

30. सो वोह एक दूसरे की तरफ़ मुतवज्जेह हो कर बाहम मलामत करने लगे।

قَالُوْا يٰوَيْلَنَآ اِنَّا كُنَّا طٰغِيْنَ ﴿۳۱﴾

31. केहने लगे : हाए हमारी शामत ! बेशक हम ही सरकश-व-बाग़ी थे।

عَسٰى رَبُّنَآ اَنْ يُّبْدِلَنَا خَيْرًا مِّنْهَآ
اِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا رٰغِبُوْنَ ﴿۳۲﴾

३२. उम्मीद है हमारा रब हमें इसके बदले में इससे बेहतर देगा, बेशक हम अपने रब की तरफ़ रुजू करते हैं।

كَذٰلِكَ الْعَذَابُ ؕ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ
اَكْبَرُ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿۳۳﴾ ع ۳۳ ۳ وقف لازم

33. अज़ाब इसी तरह होता है, और वाक़ई आख़िरत का अज़ाब (इससे) कहीं बढ़ कर है, काश ! वोह लोग जानते होते।

اِنَّ لِلْمُتَّقِيْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتِ
النَّعِيْمِ ﴿۳۴﴾

34. बेशक परहेज़गारों के लिए उनके रब के पास ने'मतों वाले बाग़ हैं।

اَفَنَجْعَلُ الْمُسْلِمِيْنَ كَالْمُجْرِمِيْنَ ﴿۳۵﴾ ؕ

35. क्या हम फरमां बरदारों को मुज्रिमों की तरह (महरूम) कर देंगे।

مَا لَكُمْ ۫ كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ ﴿۳۶﴾ ۚ

३६. तुम्हें क्या हो गया है, क्या फैस्ला करते हो।

اَمْ لَكُمْ كِتٰبٌ فِيْهِ تَدْرُسُوْنَ ﴿۳۷﴾ ۙ

37. क्या कुम्हारे पास कोई किताबहै जिसमें तुम (येह) पढ़ते हो।

اِنَّ لَكُمْ فِيْهِ لَمَا تَخَيَّرُوْنَ ﴿۳۸﴾ ۚ

38. कि तुम्हारे लिए उसमें वोह कुछ है जो तुम पसंद करते हो।

اَمْ لَكُمْ اَيْمَانٌ عَلَيْنَا بَالِغَةٌ اِلٰى
يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۙ اِنَّ لَكُمْ لَمَا

39. या तुम्हारे लिए हमारे ज़िम्मे कुछ (ऐसे) पुख़्ता अ़हदो पैमान हैं जो रोज़े क़ियामत तक बाक़ी रहें (जिनके

تَحْكُمُوْنَ ﴿٣٩﴾

ज़रीए हम पाबंद हों) कि तुम्हारे लिए वोही कुछ होगा जिसका तुम (अपने हक़ में) फ़ैसला करोगे।

سَلْهُمْ اَيُّهُمْ بِذٰلِكَ زَعِيْمٌ ﴿٤٠﴾ ع ١٥

40. उनसे पूछिए कि उनमें से कौन इस (क़िस्म की बेहूदा बात)का ज़िम्मे दार है।

اَمْ لَهُمْ شُرَكَآءُ ۚ فَلْيَاْتُوْا بِشُرَكَآئِهِمْ اِنْ كَانُوْا صٰدِقِيْنَ ﴿٤١﴾

41. या उनके कुछ और शरीक (भी) हैं? तो उन्हें चाहिए कि अपने शरीकों को ले आएं अगर वोह सच्चे हैं।

يَوْمَ يُكْشَفُ عَنْ سَاقٍ وَّيُدْعَوْنَ اِلَى السُّجُوْدِ فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ﴿٤٢﴾ لا

42. जिस दिन साक़ (या'नी अहवाले क़ियामत की हौलनाक शिद्दत) से परदा उठाया जाएगा और वोह ना फ़रमान) लोग सजदे के लिए बुलाए जाएंगे तो वोह (सजदह) न कर सकेंगे।

خَاشِعَةً اَبْصَارُهُمْ تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ۭ وَقَدْ كَانُوْا يُدْعَوْنَ اِلَى السُّجُوْدِ وَهُمْ سٰلِمُوْنَ ﴿٤٣﴾

43. उनकी आंखें (हैबत और नदामत के बाइस) झुकी हुई होंगी, (और) उन पर ज़िल्लत छा रही होगी, हालांकि वोह (दुनिया में भी) सजदे के लिए बुलाए जाते थे जबकि वोह तंदुरुस्त थे (मगर फिर भी सजदे के इन्कारी थे)।

فَذَرْنِيْ وَمَنْ يُّكَذِّبُ بِهٰذَا الْحَدِيْثِ ۭ سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِّنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٤٤﴾ لا

44. पस (ऐ हबीबे मुकर्रम !) आप मुझे और उस शख़्स को जो इस कलाम को झुटलाता है (इन्तिक़ाम के लिए) छोड़ दें । अब हम उन्हें आहिस्ता आहिस्ता (तबाही की तरफ़) इस तरह ले जाएंगे कि उन्हें मा'लूम तक न होगा।

وَاُمْلِيْ لَهُمْ ۭ اِنَّ كَيْدِيْ مَتِيْنٌ ﴿٤٥﴾

45. और मैं उन्हें मोहलत दे रहा हूं, बेशक मेरी तदबीर बहुत मज़बूत है।

اَمْ تَسْـَٔلُهُمْ اَجْرًا فَهُمْ مِّنْ مَّغْرَمٍ مُّثْقَلُوْنَ ﴿٤٦﴾ ج

46. क्या आप उनसे (तब्लीग़े रिसालत पर) कोई मुआ़वज़ा मांग रहे हैं कि वोह तावान (के बोझ) से दबे जा रहे हैं।

اَمْ عِنْدَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُبُوْنَ ﴿٤٧﴾

47. क्या उनके पास इल्मे गैब है कि वोह (उसकी बुन्याद पर अपने फैसले) लिखते हैं।

فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تَكُنْ

48. पस आप अपने रब के हुक्म के इन्तिज़ार में सब्र

كَصَاحِبِ الْحُوْتِ ۘ اِذْ نَادٰى وَهُوَ
مَكْظُوْمٌ ۗ ﴿٤٨﴾

फ़रमाइये और मछलीवाले (पयगम्बर यूनुस ﷺ) की तरह (दिल गिरफ़्ता) न हों, जब उन्होंने (अल्लाह को) पुकारा इस हाल में कि वोह (अपनी क़ौम पर) ग़मो गुस्से से भरे हुए थे।

لَوْلَآ اَنْ تَدٰرَكَهٗ نِعْمَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ
لَنُبِذَ بِالْعَرَآءِ وَهُوَ مَذْمُوْمٌ ﴿٤٩﴾

49. अगर उनके रबकी रह़मतो ने'मत उनकी दस्तगीरी न करती तो वोह ज़रूर चट्यल मैदान में फेंक दिए जाते और वोह मलामत ज़दह होते (मगर अल्लाहने उन्हें उससे महफ़ूज़ रख्खा।

فَاجْتَبٰهُ رَبُّهٗ فَجَعَلَهٗ مِنَ
الصّٰلِحِيْنَ ﴿٥٠﴾

50. फिर उनके रबने उन्हें बर गुज़ीदह बना लिया और उन्हें (अपने क़ुर्बे ख़ास से नवाज़ कर) कामिल नेकूकारों में (शामिल) फ़रमा दिया।

وَ اِنْ يَّكَادُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا
لَيُزْلِقُوْنَكَ بِاَبْصَارِهِمْ لَمَّا سَمِعُوا
الذِّكْرَ وَيَقُوْلُوْنَ اِنَّهٗ لَمَجْنُوْنٌ ﴿٥١﴾
وَمَا هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿٥٢﴾ ع

51. और बेशक काफ़िर लोग जब क़ुर्आन सुनते हैं तो ऐसा लगता है कि आपको अपनी (ह़ासिदान बद) नज़रों से नुक़्सान पहुंचाना चाह्ते हैं और केहते हैं कि येह तो दीवाना है।

52. और वोह (क़ुर्आन) तो सारे जहानों के लिए नसीह़त है.

आयातुहा 52 | 69 सूरतुल ह़ाक़्क़ति मक्क़िय्यतुन 78 | रुकूआतुहा 2

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ़ जो निहयात महरबान हमेशा रह़म फ़रमाने वाला है।

اَلْحَآقَّةُ ۙ ﴿١﴾

1. यक़ीनन वाक़े' होने वाली घड़ी।

مَا الْحَآقَّةُ ۚ ﴿٢﴾

2. क्या चीज़ है यक़ीनन वाक़े' होने वाली घड़ी।

وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الْحَآقَّةُ ۗ ﴿٣﴾

3. और आपको किस चीज़ने ख़बरदार किया कि यक़ीनन वाक़े' होनेवाली (क़ियामत) कैसी है।

كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ وَعَادٌۢ بِالْقَارِعَةِ ﴿٤﴾

4. समूद और आ़दने (जुम्ला मौजूदात को) बाहमी टकराव से पाश पाश कर देनेवाली (क़ियामत) को झुटलाया था।

فَاَمَّا ثَمُوْدُ فَاُهْلِكُوْا بِالطَّاغِيَةِ ۝٥

5. पस क़ौमे सूमद के लोग ! तो वोह तो हद से ज़ियादह कड़कदार चिंघाड़नेवाली आवाज़ से हलाक कर दिए गए।

وَ اَمَّا عَادٌ فَاُهْلِكُوْا بِرِيْحٍ صَرْصَرٍ عَاتِيَةٍ ۝٦ۙ

6. और रहे क़ौमे आ़द के लोग ! तो वोह (भी) ऐसी तेज़ आंधी से हलाक कर दिए गए जो इन्तिहाई सर्द निहायत गरजदार थी।

سَخَّرَهَا عَلَيْهِمْ سَبْعَ لَيَالٍ وَّ ثَمٰنِيَةَ اَيَّامٍ ۙ حُسُوْمًا ۙ فَتَرَى الْقَوْمَ فِيْهَا صَرْعٰى ۙ كَاَنَّهُمْ اَعْجَازُ نَخْلٍ خَاوِيَةٍ ۝٧ۚ

7. अल्लाहने उस (आंधी) को उन पर मुसल्सल सात रातें और आठ दिन मुसल्लत रख्खा, सो तू उन लोगों को उस (अ़र्से) में (इस तरह) मरे पड़े देखता, (तो यूं लगता) गोया वोह खजूर के गिरे हुए दरख़्तों की खोखली जड़ें हैं।

فَهَلْ تَرٰى لَهُمْ مِّنْۢ بَاقِيَةٍ ۝٨

8. सो तू क्या उनमें से किसी को बाक़ी देखता है।

وَ جَآءَ فِرْعَوْنُ وَ مَنْ قَبْلَهٗ وَ الْمُؤْتَفِكٰتُ بِالْخَاطِئَةِ ۝٩ۚ

9. और फ़िरऔ़न जो उससे पहले थे और (क़ौमे लूतकी) उल्टी हुई बस्तियों (के बाशिन्दों) ने बड़ी ख़ताएं की थीं।

فَعَصَوْا رَسُوْلَ رَبِّهِمْ فَاَخَذَهُمْ اَخْذَةً رَّابِيَةً ۝١٠

10. पस उन्होंने (भी) अपने रब के रसूल की ना फ़रमानी की, सो अल्लाहने उन्हें निहायत सख़्त गिरफ़्त में पकड़ लिया।

اِنَّا لَمَّا طَغَا الْمَآءُ حَمَلْنٰكُمْ فِي الْجَارِيَةِ ۝١١ۙ

11. बेशक जब (तूफ़ाने नूह़ का) पानी ह़द से गुज़र गया तो हमने तुम्हें रवां कश्ती में सवार कर लिया।

لِنَجْعَلَهَا لَكُمْ تَذْكِرَةً وَّتَعِيَهَآ اُذُنٌ وَّاعِيَةٌ ۝١٢

12. ताकि हम उस (वाक़िए़) को तुम्हारे लिए (याद गार) नसीह़त बना दें और मह़फ़ूज़ रखनेवाले कान उसे याद रख्खें।

فَاِذَا نُفِخَ فِي الصُّوْرِ نَفْخَةٌ وَّاحِدَةٌ ۝١٣ۙ

13. फिर जब सूर में एक मर्तबा फूंक मार दी जाएगी।

وَّ حُمِلَتِ الْاَرْضُ وَ الْجِبَالُ

14. और ज़मीन और पहाड़ (अपनी जग्हों से) उठा लिए

فَدُكَّتَا دَكَّةً وَّاحِدَةً ﴿١٤﴾

जाएंगे, फिर वोह एक ही बार टकरा कर रेज़ा रेज़ा कर दिए जाएंगे।

فَيَوْمَئِذٍ وَّقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ﴿١٥﴾

15. सो उस वक़्त वाक़े' होने वाली (क़ियामत) बरपा हो जाएगी।

وَانْشَقَّتِ السَّمَآءُ فَهِيَ يَوْمَئِذٍ وَّاهِيَةٌ ﴿١٦﴾

16. और (सब) आस्मानी कुर्रे फट जाएंगे और येह काइनात (एक निज़ाम में मरबूत और ह़रकत में रखने वाली) क़ुव्वत के ज़रीए (सियाह) शिगाफ़ों ★ पर मुश्तमिल हो जाएगी।

وَّالْمَلَكُ عَلٰٓى اَرْجَآئِهَا ؕ وَ يَحْمِلُ عَرْشَ رَبِّكَ فَوْقَهُمْ يَوْمَئِذٍ ثَمٰنِيَةٌ ﴿١٧﴾

17. और फ़रिश्ते उसके किनारों पर खड़े होंगे, और आपके रबके अ़र्श को उस दिन उनके ऊपर आठ (फ़रिश्ते या फ़रिश्तों के तबक़ात) उठाए होंगे।

يَوْمَئِذٍ تُعْرَضُوْنَ لَا تَخْفٰى مِنْكُمْ خَافِيَةٌ ﴿١٨﴾

18. उस जिन तुम (हिसाब के लिए) पेश किए जाओगे, तुम्हारी कोई पोशीदह बात छुपी न रहेगी।

فَاَمَّا مَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ بِيَمِيْنِهٖ ۙ فَيَقُوْلُ هَآؤُمُ اقْرَءُوْا كِتٰبِيَهْ ﴿١٩﴾

19. सो वोह शख़्स जिसका नामए आ'माल उसके दाएं हाथ में दिया जाएगा तो वोह (खुशी से) कहेगा : आओ मेरे नामए आ'माल पढ़ लो।

اِنِّيْ ظَنَنْتُ اَنِّيْ مُلٰقٍ حِسَابِيَهْ ﴿٢٠﴾

20. मैं तो यक़ीन रखता था कि मैं अपने ह़िसाब को (आसान) पानेवाला हूं।

فَهُوَ فِيْ عِيْشَةٍ رَّاضِيَةٍ ﴿٢١﴾

21. सो वोह पसन्दीदह ज़िन्दगी बसर करेगा।

فِيْ جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ﴿٢٢﴾

22. बुलन्दो बाला जन्नत में।

شقٌّ فى الأديم والثوب ونحوهما، يقال: وَهِيَ: وَهِيَ، يَهِي، وَهْيًا★ الثوب أى إنشَقَّ وَ تَخَرقَّ ..... الوَهْيُ: واهية का मा'ना है, (चमड़े, कपड़े या इस क़िस्म की दूसरी चीज़ों का फट जाना और उनमें शिगाफ़ हो जाना, इसी लिए कहा जाता है : कपड़ा फट गया और उसमें शिगाफ़ हो गया) अल मफ़्रिदात, लिसानुल अ़रब, क़ामूसुल मुह़ीत, अल मुन्जिद वग़ैरह) इसे जदीद साइन्स ने black holes से ता'बीर किया है।

قُطُوْفُهَا دَانِيَةٌ ﴿٢٣﴾

23. जिसके ख़ूशे (फलों की कसरत के बाइस) झुके हुए होंगे।

كُلُوْا وَاشْرَبُوْا هَنِيْٓـًٔا بِمَآ اَسْلَفْتُمْ فِي الْاَيَّامِ الْخَالِيَةِ ﴿٢٤﴾

24. (उनसे कहा जाएगा :) ख़ूब लुत्फ़ अंदोज़ी के साथ खाओ और पियो उन (आ'माल) के बदले जो तुम गुज़िश्ता (ज़िंदगी के) अय्याम में आगे भेज चुके थे।

وَاَمَّا مَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ بِشِمَالِهٖ ۙ فَيَقُوْلُ يٰلَيْتَنِيْ لَمْ اُوْتَ كِتٰبِيَهْ ۚ ﴿٢٥﴾

25. और वोह शख़्स जिसका नामए आ'माल उसके बाएं हाथ में दिया जाएगा तो वोह कहेगा : हाए काश ! मुझे मेरा नामए आ'माल न दिया गया होता।

وَلَمْ اَدْرِ مَا حِسَابِيَهْ ۚ ﴿٢٦﴾

26. और मैं न जानता कि मेरा हिसाब कया है।

يٰلَيْتَهَا كَانَتِ الْقَاضِيَةَ ۚ ﴿٢٧﴾

27. हाए काश ! वोही (मौत) काम तमाम कर चुकी होती।

مَآ اَغْنٰى عَنِّيْ مَالِيَهْ ۚ ﴿٢٨﴾

28. (आज) मेरा माल मुझ से (अ़ज़ाब को) कुछ भी दूर न कर सका।

هَلَكَ عَنِّيْ سُلْطٰنِيَهْ ۚ ﴿٢٩﴾

29. मुझसे मेरी कुव्वतव सल्तनत (भी) जाती रही।

خُذُوْهُ فَغُلُّوْهُ ۙ ﴿٣٠﴾

30.(हुक्म होगा :) इसे पकड़ लो और इसे तौक़ पेहना दो।

ثُمَّ الْجَحِيْمَ صَلُّوْهُ ۙ ﴿٣١﴾

31. फिर इसे दोज़ख में फेंक दो।

ثُمَّ فِيْ سِلْسِلَةٍ ذَرْعُهَا سَبْعُوْنَ ذِرَاعًا فَاسْلُكُوْهُ ﴿٣٢﴾

32. फिर एक ज़ंजीर में जिसकी लम्बाई सत्तर गज़ है इसे जकड़ दो।

اِنَّهٗ كَانَ لَا يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ الْعَظِيْمِ ۙ ﴿٣٣﴾

33. बेशक येह बड़े अ़ज़मतवाले अल्लाह पर ईमान नहीं रखता था।

وَلَا يَحُضُّ عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ ﴿٣٤﴾

34. और न मोहताज को खाना खिलाने पर रग़बत रखता था।

فَلَيْسَ لَهُ الْيَوْمَ هٰهُنَا حَمِيْمٌ ۙ ﴿٣٥﴾

35. सो आज के दिन न उसका कोई गर्म जोश दोस्त है।

وَّلَا طَعَامٌ اِلَّا مِنْ غِسْلِيْنٍ ۙ ﴿٣٦﴾

36. और न पीप के सिवा (उस के लिए) कोई खाना है।

لَّا يَاْكُلُهٗٓ اِلَّا الْخَاطِـُٔوْنَ ﴿٣٧﴾

37. जिसे गुनहगारों के सिवा कोई न खाएगा।

فَلَآ اُقْسِمُ بِمَا تُبْصِرُوْنَ ۙ ﴿٣٨﴾

38. सो मैं क़सम खाता हूं उन चीज़ों की जिन्हे तुम देखते हो।

ع ١٢ ٥

وَمَا لَا تُبْصِرُوْنَ ﴿۳۹﴾

39. और उन चीज़ों की (भी) जिन्हें तुम नहीं देखते।

اِنَّهٗ لَقَوْلُ رَسُوْلٍ كَرِيْمٍ ﴿۴۰﴾

40. बेशक येह (कुरआन) बुज़ुर्गी-व-अ़ज़मतवाले रसूल (ﷺ) का (मुनज़्ज़िलु मिनल्लाह) फ़रमान है, (जिसे वोह रिसालतन और नियाबतन बयान फ़रमाते हैं)

وَّ مَا هُوَ بِقَوْلِ شَاعِرٍ ؕ قَلِيْلًا مَّا تُؤْمِنُوْنَ ﴿۴۱﴾

41. और येह किसी शाइर का कलाम नहीं (कि अदबी महारत से ख़ुद लिखा गया हो) तुम बहुत ही कम यक़ीन रखते हो।

وَ لَا بِقَوْلِ كَاهِنٍ ؕ قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ ﴿۴۲﴾

42. और न (येह) किसी काहिन का कलाम है (कि फ़न्नी अंदाज़ों से वज़ा' किया गया हो) तुम बहुत ही कम नसीह़त ह़ासिल करते हो।

تَنْزِيْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۴۳﴾

43. (येह) तमाम जहानों के रब की तरफ़ से नाज़िल शुदह है।

وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْاَقَاوِيْلِ ﴿۴۴﴾

44. और अगर वोह हम पर कोई (एक) बात भी घड़ कर केह देते।

لَاَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ ﴿۴۵﴾

45. तो यक़ीनन हम उन को पूरी कुव्वत व कुद्रत के साथ पकड़ लेते।

ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ ﴿۴۶﴾

46. फिर हम ज़रूर उनकी शह रग काट देते।

فَمَا مِنْكُمْ مِّنْ اَحَدٍ عَنْهُ حٰجِزِيْنَ ﴿۴۷﴾

47. फिर तुम में से कोई भी (हमें) इससे रोकनेवाला न होता।

وَ اِنَّهٗ لَتَذْكِرَةٌ لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿۴۸﴾

48. और पस बिला शुब्हा येह (कुरआन) परहेज़गारों के लिए नसीह़त है।

وَ اِنَّا لَنَعْلَمُ اَنَّ مِنْكُمْ مُّكَذِّبِيْنَ ﴿۴۹﴾

49. और यक़ीनन हम जानते हैं कि तुम में से बा'ज़ लोग (इस खुली हुई सच्चाई को) झुटलाने वाले हैं।

وَ اِنَّهٗ لَحَسْرَةٌ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿۵۰﴾

50. और वाक़ई येह काफ़िरों के लिए (मूजिबे) ह़सरत है।

وَ اِنَّهٗ لَحَقُّ الْيَقِيْنِ ﴿۵۱﴾

51. और बेशक येह ह़क़्क़ुल यक़ीन है।

فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ ﴿٥٢﴾

52. सो (ऐ ह़बीबे मुकर्रम !) आप अपने अज़्मतवाले रब के नाम की तस्बीह़ करते रहिए।

आयातुहा 44 | 70 सूरतुल मआरिजि मक्किय्यतुन 79 | रुकूआतुहा 2

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ़ जो निहयात महरबान हमेशा रह़म फ़रमाने वाला है।

سَأَلَ سَائِلٌ بِعَذَابٍ وَاقِعٍ ﴿١﴾

1. एक साइल ने ऐसा अ़ज़ाब तलब किया जो वाके' होने वाला है।

لِلْكَافِرِينَ لَيْسَ لَهُ دَافِعٌ ﴿٢﴾

2. काफिरों के लिए जिसे कोई दफ़ा' करनेवाला नहीं।

مِنَ اللَّهِ ذِي الْمَعَارِجِ ﴿٣﴾

3. (वोह) अल्लाह की जानिब से (वाक़े' होगा) जो आस्मानी ज़ीनों (और बुलन्द मरातिबो दरजात) का मालिक है।

تَعْرُجُ الْمَلَائِكَةُ وَالرُّوحُ إِلَيْهِ فِي يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهُ خَمْسِينَ أَلْفَ سَنَةٍ ﴿٤﴾

4. उस (के अ़र्श) की तरफ़ फ़रिश्ते और रूहुल अमीन उ़रूज करते हैं एक दिन में, जिसका अंदाज़ा (दुन्यवी ह़िसाब से) पचास बज़ार बरस का है। ★

فَاصْبِرْ صَبْرًا جَمِيلًا ﴿٥﴾

5. सो (ऐ ह़बीब !) आप (काफ़िरों की बातों पर) हर शिक्वे से पाक सब्र फरमाएं.

إِنَّهُمْ يَرَوْنَهُ بَعِيدًا ﴿٦﴾

6. बेशक वोह (तो) उस (दिन) को दूर समझ रहे हैं।

وَنَرَاهُ قَرِيبًا ﴿٧﴾

7. और हम उसे क़रीब ही देखते हैं।

يَوْمَ تَكُونُ السَّمَاءُ كَالْمُهْلِ ﴿٨﴾

8.जिस दिन आस्मान पिघले हुए तांबे की तरह हो जाएगा।

وَتَكُونُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ ﴿٩﴾

9.और पहाड़ (धुन्की हुई) रंगीन ऊन की तरह हो जाएगा।

★ فِي يَوْمٍ अगर وَاقِعٍ का सिला हो तो मा'ना होगा कि जिस दिन (यौमे क़ियामत)को अज़ाब वाक़े' होगा उसका दौरानिया 50 हज़ार बरस के क़रीब है,और अगर येह تَعْرُجُ का सिला हो तो मा'ना होगा कि मलाइका और अरवाहे मोमिनीन जो अ़र्शे इलाही की तरफ़ उरूज करती हैं उनके उरूज की रफ़्तार 50 हज़ार बरस यौमिया है, वोह फिर भी कितनी मुद्दत में मंज़िले मक़्सूद तक पहुंचते हैं। والله أعلم بالصواب (यहां से नूरी साल (light year) के तसव्वुर का इस्तिंबात होता है।)

وَلَا يَسْـَٔلُ حَمِيْمٌ حَمِيْمًا ﴿١٠﴾

10. और कोई दोस्त किसी दोस्त का पुर्सां न होगा।

يُّبَصَّرُوْنَهُمْ ؕ يَوَدُّ الْمُجْرِمُ لَوْ يَفْتَدِيْ
مِنْ عَذَابِ يَوْمِئِذٍۭ بِبَنِيْهِ ﴿١١﴾

11. (हालां कि) वोह (एक दूसरे को) दिखाए जा रहे होंगे, मुजरिम आरज़ू करेगा कि काश! उस दिन के अ़ज़ाब (से रिहाई) के बदले में अपने बेटे दे दे।

وَصَاحِبَتِهٖ وَاَخِيْهِ ﴿١٢﴾

12. और अपनी बीवी और अपना भाई (दे डाले)।

وَفَصِيْلَتِهِ الَّتِيْ تُـْٔوِيْهِ ﴿١٣﴾

13. और अपना (तमाम) खानदान जो उसे पनाह देता था।

وَمَنْ فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا ۙ ثُمَّ
يُنْجِيْهِ ﴿١٤﴾

14.और जितने लोग भी ज़मीन में हैं, सब के सब (अपनी ज़ात के लिए बदला कर दे) फिर येह (फ़िदया) उसे (अल्लाह के अज़ाब से) बचा ले।

كَلَّا ؕ اِنَّهَا لَظٰى ﴿١٥﴾

15.ऐसा हरगिज़ न होगा, बेशक वोह शो'ला ज़न आग है।

نَزَّاعَةً لِّلشَّوٰى ﴿١٦﴾

16. सर और तमाम आ'ज़ाए बदन की खाल उतार देने वाली है।

تَدْعُوْا مَنْ اَدْبَرَ وَتَوَلّٰى ﴿١٧﴾

17. और वोह उसे बुला रही है जिसने (हक़ से) पीठ फेरी और रूगर्दानी की।

وَجَمَعَ فَاَوْعٰى ﴿١٨﴾

18. और (उसने) माल जमा' किया फिर (उसे तक़्सीम से) रोके रख्खा.

اِنَّ الْاِنْسَانَ خُلِقَ هَلُوْعًا ﴿١٩﴾

19. बेशक इन्सान बे सब्र और लालची पैदा हुवा है।

اِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ جَزُوْعًا ﴿٢٠﴾

20. जब उसे मुसीबत (या माली नुक़्सान) पहुंचे तो घबरा जाता है।

وَّاِذَا مَسَّهُ الْخَيْرُ مَنُوْعًا ﴿٢١﴾

21. और जब उसे भलाई (या माली फ़राख़ी) हासिल हो तो बुख़्ल करता है।

اِلَّا الْمُصَلِّيْنَ ﴿٢٢﴾

22. मगर वोह नमाज़ अदा करने वाले।

الَّذِيْنَ هُمْ عَلٰى صَلَاتِهِمْ دَآئِمُوْنَ ﴿٢٣﴾

23. जो अपनी नमाज़ पर हमेशगी क़ाइम रखने वाले हैं।

وَالَّذِيْنَ فِيْٓ اَمْوَالِهِمْ حَقٌّ مَّعْلُوْمٌ ﴿٢٤﴾

24. और वोह (ईसार केश) लोग जिनके अम्वाल में हिस्सा मुक़र्रर है।

لِّلسَّآئِلِ وَالْمَحْرُوْمِ ﴿۲۵﴾

25. मांगनेवाले और न मांगनेवाले मोहताज का।

وَ الَّذِيْنَ يُصَدِّقُوْنَ بِيَوْمِ الدِّيْنِ ﴿۲۶﴾

26. और वोह लोग जो रोज़े जज़ा की तस्दीक़ करते हैं।

وَ الَّذِيْنَ هُمْ مِّنْ عَذَابِ رَبِّهِمْ مُّشْفِقُوْنَ ﴿۲۷﴾

27. और वोह लोग जो अपने रब के अ़ज़ाब से डरनेवाले हैं।

اِنَّ عَذَابَ رَبِّهِمْ غَيْرُ مَاْمُوْنٍ ﴿۲۸﴾

28. बेशक उनके रब का अ़ज़ाब ऐसा नहीं जिससे बे ख़ौफ़ हुआ जाए।

وَالَّذِيْنَ هُمْ لِفُرُوْجِهِمْ حٰفِظُوْنَ ﴿۲۹﴾

29. और वोह लोग जो अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करते हैं।

اِلَّا عَلٰٓى اَزْوَاجِهِمْ اَوْ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ فَاِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُوْمِيْنَ ﴿۳۰﴾

30.सिवाए अपनी मन्कूहा बीवियों के या अपनी मम्लूका कनीज़ों के, सो (इसमें) उन पर कोई मलामत नहीं।

فَمَنِ ابْتَغٰى وَرَآءَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْعٰدُوْنَ ﴿۳۱﴾

31. सो जो इनके अ़लावह तलब करे तो वोही लोग ह़द से गुज़रनेवाले हैं।

وَ الَّذِيْنَ هُمْ لِاَمٰنٰتِهِمْ وَ عَهْدِهِمْ رٰعُوْنَ ﴿۳۲﴾

32. और वोह लोग जो अपनी अमानतों और अपने वा'दों की निगेह दाश्त करते हैं।

وَالَّذِيْنَ هُمْ بِشَهٰدٰتِهِمْ قَآئِمُوْنَ ﴿۳۳﴾

33.और वोह लोग जो अपनी गवाहियों पर क़ाइम रेहते हैं।

وَالَّذِيْنَ هُمْ عَلٰى صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ ﴿۳۴﴾

34. और वोह लोग जो अपनी नमाज़ों पर क़ाइम रेहते हैं।

اُولٰٓئِكَ فِيْ جَنّٰتٍ مُّكْرَمُوْنَ ﴿۳۵﴾ ع ۱ ۳۵ ۷

35. येही लोग हैं जो जन्नतों में मुअ़ज़्ज़ो मुकर्रम होंगे।

فَمَالِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا قِبَلَكَ مُهْطِعِيْنَ ﴿۳۶﴾

36. तो काफ़िर को क्या हो गया है कि आप की तरफ़ दौड़े चले आ रहे हैं।

عَنِ الْيَمِيْنِ وَ عَنِ الشِّمَالِ

37. दाएं जानिब से (भी) और बाएं जानिब से (भी)

عِزِيْنَ ﴿٣٧﴾

गिरोह दर गिरोह।

اَيَطْمَعُ كُلُّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ اَنْ يُّدْخَلَ جَنَّةَ نَعِيْمٍ ﴿٣٨﴾

38. क्या उनमें से हर शख़्स येह तवक़्क़ो' रखता है कि वोह (बिग़ैर ईमानो अ़मल के) ने'मतोंवाली जन्नत में दाख़िल कर दिया जाएगा।

كَلَّا ؕ اِنَّا خَلَقْنٰهُمْ مِّمَّا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٩﴾

39. हरगिज़ नहीं, बेशक हमने उन्हें उस चीज़ से पैदा किया है जिसे वोह (भी) जानते हैं।

فَلَآ اُقْسِمُ بِرَبِّ الْمَشٰرِقِ وَالْمَغٰرِبِ اِنَّا لَقٰدِرُوْنَ ﴿٤٠﴾

40. सो मैं मशारिक़ो मग़ारिब के रब की क़सम खाता हूं के बेशक हम पूरी क़ुद्रत रखते हैं।

عَلٰٓى اَنْ نُّبَدِّلَ خَيْرًا مِّنْهُمْ ۙ وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوْقِيْنَ ﴿٤١﴾

41. इस पर कि हम बदल कर उनसे बेहतर लोग ले आएं, और हम हरगिज़ आ़जिज़ नहीं हैं।

فَذَرْهُمْ يَخُوْضُوْا وَيَلْعَبُوْا حَتّٰى يُلٰقُوْا يَوْمَهُمُ الَّذِيْ يُوْعَدُوْنَ ﴿٤٢﴾

42. सो आप उन्हें छोड़ दीजिए कि वोह अपनी बेहूदा बातों और खेल तमाशे में पड़े रहें यहां तक कि अपने उस दिन से आ मिलें जिसका उनसे वा'दा किया जारहा है।

يَوْمَ يَخْرُجُوْنَ مِنَ الْاَجْدَاثِ سِرَاعًا كَاَنَّهُمْ اِلٰى نُصُبٍ يُّوْفِضُوْنَ ﴿٤٣﴾

43. जिस दिन वोह क़ब्रों से डरते हुए यूं निक्लेंगे गोया वोह बुतों के स्थानों की तरफ़ दौड़े जा रहे हैं।

خَاشِعَةً اَبْصَارُهُمْ تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ؕ ذٰلِكَ الْيَوْمُ الَّذِيْ كَانُوْا يُوْعَدُوْنَ ﴿٤٤﴾ ع ٢ ٩ ٨

44. (उनका) ह़ाल येह होगा कि उनकी आंखें (शर्मो ख़ौफ़ से) झुक रही होंगी, ज़िल्लत उन पर छा रही होगी, येही है वोह दिन जिसका उनसे वा'दा किया जाता था।

आयतुहा 28 | 71 सुरतु नूहिन मक्कियतुन 71 | रुकूआ़तुहा 2

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रह़म फ़रमानेवाला है।

اِنَّآ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖٓ اَنْ

1. बेशक हमने नूह़ (عليه السلام) को उनकी क़ौम की तरफ़

اَنْذِرْ قَوْمَكَ مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ①

भेजा कि आप अपनी क़ौम को डराएं क़ब्ल इस के कि उन्हें दर्दनाक अ़ज़ाब आ पहुंचे।

قَالَ يٰقَوْمِ اِنِّيْ لَكُمْ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ۙ②

2. उन्होंने कहा : ऐ मेरी क़ौम ! बेशक मैं तुम्हें वाज़ेह डर सुनानेवाला हूं।

اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَاتَّقُوْهُ وَ اَطِيْعُوْنِ ۙ③

3. कि तुम अल्लाह की इ़बादत करो और उससे डरो और मेरी इताअ़त करो।

يَغْفِرْ لَكُمْ مِّنْ ذُنُوْبِكُمْ وَ يُؤَخِّرْكُمْ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ اِنَّ اَجَلَ اللّٰهِ اِذَا جَآءَ لَا يُؤَخَّرُ ۘ لَوْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ④

4. वोह तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा और तुम्हें मुक़र्ररह मद्दत तक मोहलत अ़ता करेगा, बेशक अल्लाह की (मुक़र्रर कर्दह) मुद्दत जब आ जाए तो मोहलत नहीं दी जाती, काश! तुम जानते होते।

وقف لازم

قَالَ رَبِّ اِنِّيْ دَعَوْتُ قَوْمِيْ لَيْلًا وَّ نَهَارًا ۙ⑤

5. नूह़ (عليه السلام) ने अ़र्ज़ किया : ऐ मेरे रब ! मैं अपनी क़ौम को रात दिन बुलाता हूं।

فَلَمْ يَزِدْهُمْ دُعَآءِيْٓ اِلَّا فِرَارًا ⑥

6. लेकिन मेरी दा'वत ने उनके लिए सिवाए भागने के कुछ ज़ियादह नहीं किया।

وَ اِنِّيْ كُلَّمَا دَعَوْتُهُمْ لِتَغْفِرَ لَهُمْ جَعَلُوْٓا اَصَابِعَهُمْ فِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَ اسْتَغْشَوْا ثِيَابَهُمْ وَ اَصَرُّوْا وَ اسْتَكْبَرُوا اسْتِكْبَارًا ۚ⑦

7. और मैंने जब (भी) उन्हें (ईमान की तरफ़) बुलाया ताकि तू उन्हें बख़्श दे तो उन्होंने अपनी उंगलियां अपने कानों में दे लीं और अपने ऊपर अपने कपड़े लपेट लिए और (कुफ़्र पर) हट धर्मी की और शदीद तकब्बुर किया।

ثُمَّ اِنِّيْ دَعَوْتُهُمْ جِهَارًا ۙ⑧

8. फिर मैं ने उन्हें बुलंद आवाज़ से दा'वत दी।

ثُمَّ اِنِّيْٓ اَعْلَنْتُ لَهُمْ وَ اَسْرَرْتُ لَهُمْ اِسْرَارًا ۙ⑨

9. फिर मैं ने उन्हें ए'लानिया (भी) समझाया और उन्हें पोशीदह राज़दाराना तौर पर (भी) समझाया।

فَقُلْتُ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ غَفَّارًا ۙ﴿۱۰﴾

10. फिर मैंने कहा कि तुम अपने रब से बख़्शिश तलब करो, बेशक वोह बड़ा बख़्शनेवाला है।

يُّرْسِلِ السَّمَآءَ عَلَيْكُمْ مِّدْرَارًا ۙ﴿۱۱﴾

11. वोह तुम पर बड़ी ज़ोर दार बारिश भेजेगा।

وَّيُمْدِدْكُمْ بِاَمْوَالٍ وَّ بَنِيْنَ وَ يَجْعَلْ لَّكُمْ جَنّٰتٍ وَّيَجْعَلْ لَّكُمْ اَنْهٰرًا ؕ﴿۱۲﴾

12. और तुम्हारी मदद अम्वाल और औलाद के ज़रीए फ़रमाएगा, और तुम्हारे लिए बाग़ात उगाएगा, और तुम्हारे लिए नेहरें जारी कर देगा।

مَا لَكُمْ لَا تَرْجُوْنَ لِلّٰهِ وَقَارًا ۚ﴿۱۳﴾

13. तुम्हें क्या हो गया है कि तुम अल्लाह की अ़ज़मत का ए'तिक़ाद और मा'रिफ़त नहीं रखते।

وَقَدْ خَلَقَكُمْ اَطْوَارًا ﴿۱۴﴾

14. हालां कि उसने तुम्हें तरह़ तरह़ की ह़ालतों से पैदा फ़रमाया।

اَلَمْ تَرَوْا كَيْفَ خَلَقَ اللّٰهُ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا ۙ﴿۱۵﴾

15. क्या तुम ने नहीं देखा कि अल्लाह ने किस तरह़ सात (या मुतअ़द्दिद) आस्मानी कुर्रे बाहम मुताबिक़त के साथ (तबक़ दर तबक़) पैदा फ़रमाए।

وَّجَعَلَ الْقَمَرَ فِيْهِنَّ نُوْرًا وَّجَعَلَ الشَّمْسَ سِرَاجًا ﴿۱۶﴾

16. और उसने उसमें चाँद को रौशन किया और उसने सूरज को चराग़ (या'नी रौशनी और ह़रारत का मंबा') बनाया।

وَ اللّٰهُ اَنْۢبَتَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ نَبَاتًا ۙ﴿۱۷﴾

17. और अल्लाह ने तुम्हें ज़मीन से सबज़े की मानिन्द उगाया। ★

ثُمَّ يُعِيْدُكُمْ فِيْهَا وَ يُخْرِجُكُمْ اِخْرَاجًا ﴿۱۸﴾

18. फिर तुमको उसी (ज़मीन) में लौटा देगा और (फिर) तुम को (उसी से दोबारह) बाहर निकालेगा।

وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ بِسَاطًا ۙ﴿۱۹﴾

19. अल्लाह ने तुम्हारे लिए ज़मीन को फ़र्श बना दिया।

★ अरज़ी ज़िन्दगी में पौदों की तरह ह़यात इन्सानी की इब्तिदा और नश्वो नुमा भी कीमियाई और ह़यातियाती मराह़िल से गज़रते हुए तदरीजन हुई, इसी लिए इसे اَنْۢبَتَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ نَبَاتًا के बलीग़ इस्तिआ़रे के ज़रीए बयान किया गया है

لِّتَسْلُكُوْا مِنْهَا سُبُلًا فِجَاجًا ﴿٢٠﴾

20. ताकि तुम उसके कुशादह रास्तों में चलो फिरो।

قَالَ نُوْحٌ رَّبِّ اِنَّهُمْ عَصَوْنِیْ وَ
اتَّبَعُوْا مَنْ لَّمْ یَزِدْهُ مَالُهٗ وَ وَلَدُهٗۤ
اِلَّا خَسَارًا ﴿٢١﴾

21. नूह (عليه السلام) ने अ़र्ज़ किया : ऐ मेरे रब ! इन्हों ने मेरी ना फ़रमानी की और उस (सरकश रुअसा के तबक़े) की पैरवी करते रहे जिसके मालो दौलत और औलाद ने उन्हें सिवाए नुक़्सान के और कुछ नहीं बढ़ाया।

وَ مَكَرُوْا مَكْرًا كُبَّارًا ﴿٢٢﴾

22. और (अ़वाम को गुमराही में रखने के लिए) वोह बड़ी बड़ी चालें चलते रहे।

وَ قَالُوْا لَا تَذَرُنَّ اٰلِهَتَكُمْ وَ لَا
تَذَرُنَّ وَدًّا وَّ لَا سُوَاعًا ۙ۬ وَّ لَا
یَغُوْثَ وَ یَعُوْقَ وَ نَسْرًا ﴿٢٣﴾

23. और केहते रहे कि तुम अपने मा'बूदों को मत छोड़ना और वद्द और सुवा'और यग़ूस और यऊक़ और नस्र (नामी बुतों) को (भी) हरगिज़ न छोड़ना।

وَ قَدْ اَضَلُّوْا كَثِیْرًا ۚ۬ وَ لَا تَزِدِ
الظّٰلِمِیْنَ اِلَّا ضَلٰلًا ﴿٢٤﴾

24. और वाक़ई उन्होंने बहुत लोंगो को गुमराह किया, सो (ऐ मेरे रब !) तू (भी उन) ज़ालिमों को सिवाए गुमराही के (किसी और चीज़ में) न बढ़ा।

مِمَّا خَطِیْٓـٰٔتِهِمْ اُغْرِقُوْا فَاُدْخِلُوْا
نَارًا ۙ۬ فَلَمْ یَجِدُوْا لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ
اللّٰهِ اَنْصَارًا ﴿٢٥﴾

25. (बिल आख़िर) वोह अपने गुनाहों के सबब ग़र्क़ कर दिए गए, फिर आग में डाल दिए गए, सो वोह अपने लिए अल्लाह के मुक़ाबिल किसी को मददगार न पा सकेंगे।

وَ قَالَ نُوْحٌ رَّبِّ لَا تَذَرْ عَلَى
الْاَرْضِ مِنَ الْكٰفِرِیْنَ دَیَّارًا ﴿٢٦﴾

26. और नूह (عليه السلام) ने अर्ज़ किया : ऐ मेरे रब ! ज़मीन पर काफ़िरों में से कोई रेहनेवाला बाक़ी न छोड़।

اِنَّكَ اِنْ تَذَرْهُمْ یُضِلُّوْا
عِبَادَكَ وَ لَا یَلِدُوْۤا اِلَّا فَاجِرًا
كَفَّارًا ﴿٢٧﴾

27. बेशक अगर तू उन्हें (ज़िन्दा) छोड़ेगा तो वोह तेरे बन्दों को गुमराह करते रहेंगे, और वोह बदकार (और) सख़्त काफ़िर औलाद के सिवा किसी को जन्म नहीं देंगे।

رَبِّ اغْفِرْ لِیْ وَ لِوَالِدَیَّ وَ لِمَنْ
دَخَلَ بَیْتِیَ مُؤْمِنًا وَّ لِلْمُؤْمِنِیْنَ

28. ऐ मेरे रब ! मुझे बख़्श दे और मेरे वालिदैन को और हर उस शख़्स को जो मोमिन हो कर मेरे घर में दाख़िल

وَالْمُؤْمِنٰتِ ۭ وَلَا تَزِدِ الظّٰلِمِيْنَ
اِلَّا تَبَارًا ۝٢٨

हुआ और (जुम्ला) मोमिन मर्दों को और मोमिन औ़रतों को, और ज़ालिमों के लिए सिवाए हलाकत के कुछ (भी) ज़ियादह न फ़रमा।

ع ٢ النصف

रुकूआतुहा 2 | 72 सूरतुल जिन्नि मक्कियतुन 40 | आयातुहा 28

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत महेरबान हमेशा रहम फरमाने वाला है।

قُلْ اُوْحِيَ اِلَيَّ اَنَّهُ اسْتَمَعَ نَفَرٌ مِّنَ
الْجِنِّ فَقَالُوْٓا اِنَّا سَمِعْنَا قُرْاٰنًا
عَجَبًا ۝١

1. आप फ़रमा दें : मेरी तरफ़ वही़ की गई है के जिन्नात की एक जमाअ़त ने (मेरी तिलावत को) ग़ौर से सुना तो (जा कर अपनी क़ौम से) केहने लगे : बेशक हमने एक अ़जीब क़ुरआन सुना है।

يَّهْدِيْٓ اِلَى الرُّشْدِ فَاٰمَنَّا بِهٖ ۭ
وَلَنْ نُّشْرِكَ بِرَبِّنَآ اَحَدًا ۝٢

2. जो हिदायत की राह दिखाता है, सो हम उस पर ईमान ले आए हैं, और अपने रब के साथ किसी को हरगिज़ शरीक नहीं ठेहराएंगे।

وَّاَنَّهٗ تَعٰلٰى جَدُّ رَبِّنَا مَا اتَّخَذَ
صَاحِبَةً وَّلَا وَلَدًا ۝٣

3. और येह कि हमारे रब की शान बहुत बुलन्द है, उसने न कोई बीवी बना रख्खी है और न ही कोई औलाद।

وَّاَنَّهٗ كَانَ يَقُوْلُ سَفِيْهُنَا عَلَى
اللّٰهِ شَطَطًا ۝٤

4. और येह कि हम में से कोई अह़मक़ ही अल्लाह के बारे में ह़क़ से दूर ह़द से गुज़री हुई बातें कहा करता था।

وَّاَنَّا ظَنَنَّآ اَنْ لَّنْ تَقُوْلَ الْاِنْسُ
وَالْجِنُّ عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ۝٥

5. और येह कि हम गुमान करते थे कि इन्सान और जिन अल्लाह के बारे में हरगिज़ झूट नहीं बोलेंगे।

وَّاَنَّهٗ كَانَ رِجَالٌ مِّنَ الْاِنْسِ
يَعُوْذُوْنَ بِرِجَالٍ مِّنَ الْجِنِّ
فَزَادُوْهُمْ رَهَقًا ۝٦

6. और येह कि इन्सानों में से कुछ लोग जिन्नात में से बा'ज़ अफ़राद की पनाह लेते थे, सो उन लोगों ने उन जिन्नात की सरकशी और बढ़ा दी।

وَّاَنَّهُمْ ظَنُّوْا كَمَا ظَنَنْتُمْ اَنْ لَّنْ

7. और (ऐ गिरोहे जिन्नात !) वोह इन्सान भी अैसा ही

يَّبْعَثَ اللّٰهُ اَحَدًا ۙ﴿۷﴾

गुमान करने लगे जैसा गुमान तुमने किया कि अल्लाह (मरने के बा'द) हरगिज़ किसी को नहीं उठाएगा।

وَّاَنَّا لَمَسْنَا السَّمَآءَ فَوَجَدْنٰهَا مُلِئَتْ حَرَسًا شَدِيْدًا وَّشُهُبًا ۙ﴿۸﴾

8. और येह कि हमने आस्मानों को छुवा, और उन्हें सख़्त पेहरेदारों और (अंगारों की तरह) जलने और चमकने वाले सितारों से भरा हुआ पाया।

وَّ اَنَّا كُنَّا نَقْعُدُ مِنْهَا مَقَاعِدَ لِلسَّمْعِ ؕ فَمَنْ يَّسْتَمِعِ الْاٰنَ يَجِدْ لَهٗ شِهَابًا رَّصَدًا ۙ﴿۹﴾

9. और येह कि हम (पेहले आस्मानी ख़बर सुनने के लिए) उस के बा'ज़ मुक़ामात में बैठा करते थे, मगर अब कोई सुनना चाहे तो वोह अपनी ताक में आग का शो'ला (मुन्तज़िर) पाएगा।

وَّ اَنَّا لَا نَدْرِيْۤ اَشَرٌّ اُرِيْدَ بِمَنْ فِي الْاَرْضِ اَمْ اَرَادَ بِهِمْ رَبُّهُمْ رَشَدًا ۙ﴿۱۰﴾

10. और येह कि हम नहीं जानते कि (हमारी बन्दिश से) उन लोगों के हक़ में जो ज़मीन में हैं किसी बुराई का इरादह किया गया है या उनके रब ने उनके साथ भलाई का इरादह फ़रमाया है।

وَّ اَنَّا مِنَّا الصّٰلِحُوْنَ وَ مِنَّا دُوْنَ ذٰلِكَ ؕ كُنَّا طَرَآئِقَ قِدَدًا ۙ﴿۱۱﴾

11. और येह के हम में से कुछ नेक लोग हैं और हम (ही) में से कुछ इसके सिवा (बुरे) भी हैं, हम मुख़्तलिफ़ तरीक़ों पर (चल रहे) थे।

وَّ اَنَّا ظَنَنَّاۤ اَنْ لَّنْ نُّعْجِزَ اللّٰهَ فِي الْاَرْضِ وَلَنْ نُّعْجِزَهٗ هَرَبًا ۙ﴿۱۲﴾

12. और हमने यक़ीन कर लिया है कि हम अल्लाह के हरगिज़ ज़मीन में (रेह कर) आजिज़ नहीं कर सकते, और न ही (ज़मीन से) भाग कर उसे आजिज़ कर सकते हैं।

وَّ اَنَّا لَمَّا سَمِعْنَا الْهُدٰۤى اٰمَنَّا بِهٖ ؕ فَمَنْ يُّؤْمِنْۢ بِرَبِّهٖ فَلَا يَخَافُ بَخْسًا وَّلَا رَهَقًا ۙ﴿۱۳﴾

13. और येह कि जब हमने (किताबे) हिदायत को सुना तो हम उस पर ईमान ले आए, फिर जो शख़्स अपने रब पर ईमान लाता है तो वोह न नुक़्सान ही से ख़ौफ़ ज़दह होता है और न ज़ुल्म से।

وَّ اَنَّا مِنَّا الْمُسْلِمُوْنَ وَ مِنَّا الْقٰسِطُوْنَ ؕ فَمَنْ اَسْلَمَ فَاُولٰٓئِكَ تَحَرَّوْا رَشَدًا ﴿۱۴﴾

14. और येह कि हम में से (बा'ज़) फ़रमां बर्दार भी हैं और हम में से (बा'ज़) ज़ालिम भी हैं, फिर जो कोई फ़रमां बर्दार हो गया तो ऐसे लोगों ने ही भलाई तलब की।

وَ اَمَّا الْقٰسِطُوْنَ فَكَانُوْا لِجَهَنَّمَ
حَطَبًا ۙ ﴿۱۵﴾

15. और जो ज़ालिम हैं तो वोह दोज़ख़ का इंधन होंगे।

وَّ اَنْ لَّوِ اسْتَقَامُوْا عَلَى الطَّرِيْقَةِ
لَاَسْقَيْنٰهُمْ مَّآءً غَدَقًا ۙ ﴿۱۶﴾

16. और येह (वही भी मेरे पास आई है) कि अगर वोह तरीक़त (राहे हक़, तरीक़े ज़िक्रे इलाही) पर क़ाइम रेहते तो हम उन्हें बहुते से पानी के साथ सैराब करते।

لِّنَفْتِنَهُمْ فِيْهِ ؕ وَمَنْ يُّعْرِضْ عَنْ
ذِكْرِ رَبِّهٖ يَسْلُكْهُ عَذَابًا صَعَدًا ۙ ﴿۱۷﴾

17. ताकि हम उस (ने'मत) में उनकी आज़माइश करें, और जो शख़्स अपने रब के ज़िक्र से मुंह फेर लेगा तो वोह उसे निहायत सख़्त अ़ज़ाब में दाख़िल कर देगा।

وَّ اَنَّ الْمَسٰجِدَ لِلّٰهِ فَلَا تَدْعُوْا مَعَ
اللّٰهِ اَحَدًا ۙ ﴿۱۸﴾

18. और येह कि सजदह गाहें अल्लाह के लिए (मख़्सूस) हैं, सो अल्लाह के साथ किसी और की परस्तिश मत किया करो।

وَّ اَنَّهٗ لَمَّا قَامَ عَبْدُ اللّٰهِ يَدْعُوْهُ
كَادُوْا يَكُوْنُوْنَ عَلَيْهِ لِبَدًا ؕ ﴿۱۹﴾ ع ١٩ ١١

19. और येह कि जब अल्लाह के बन्दे (मुहम्मद ﷺ) उसकी इबादत करने खड़े हुए तो उन पर हुजूम दर हुजूम जमा' हो गए (ताकि उनकी क़िराअत सुन सकें)।

قُلْ اِنَّمَآ اَدْعُوْا رَبِّيْ وَلَآ اُشْرِكُ
بِهٖۤ اَحَدًا ﴿۲۰﴾

20. आप फ़रमा दें कि मैं तो सिर्फ़ अपने रब की इबादत करता हूं और उसके साथ किसी को शरीक नहीं बनाता।

قُلْ اِنِّيْ لَآ اَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَّ لَا
رَشَدًا ﴿۲۱﴾

21.आप फ़रमा दें कि मैं तुम्हारे लिए न तो नुक़्सान (या'नी कुफ़्र) का मालिक हूं और न भलाई (या'नी ईमान) का (गोया हक़ीक़ी मालिक अल्लाह है मैं तो ज़रीआ़ और वसीला हूं)।

قُلْ اِنِّيْ لَنْ يُّجِيْرَنِيْ مِنَ اللّٰهِ
اَحَدٌ ۙ وَّ لَنْ اَجِدَ مِنْ دُوْنِهٖ
مُلْتَحَدًا ۙ ﴿۲۲﴾

22. आप फ़रमा दें कि न मुझे हरगिज़ कोई अल्लाह के (अम्र के खिलाफ़) अ़ज़ाब से पनाह दे सक्ता है और न ही मैं क़तअ़न उसके सिवा कोई जाए पनाह पाता हूं।

اِلَّا بَلٰغًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِسٰلٰتِهٖ ؕ وَمَنْ
يَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَاِنَّ لَهٗ نَارَ

23. मगर अल्लाह की जानिबसे अह्कामात और उसके पैग़ामात का पहुंचाना (मेरी ज़िम्मेदारी है) और जो कोई अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) की ना फ़रमानी करे तो

جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ﴿٢٣﴾

बेशस उसके लिए दोज़ख़ की आग है जिसमें वोह हमेशा रहेंगे।

حَتّٰٓى اِذَا رَاَوْا مَا يُوْعَدُوْنَ فَسَيَعْلَمُوْنَ مَنْ اَضْعَفُ نَاصِرًا وَّ اَقَلُّ عَدَدًا ﴿٢٤﴾

24. यहां तक कि जब येह लोग वोह (अ़ज़ाब) देख लेंगे जिसका उनसे वा'दा किया जा रहा है तो (उस वक़्त) उन्हें मा'लूम होगा कि कौन मददगार के ए'तिबार से कमज़ोर तर और अदद के ए'तिबार से कम तर है।

قُلْ اِنْ اَدْرِيْٓ اَقَرِيْبٌ مَّا تُوْعَدُوْنَ اَمْ يَجْعَلُ لَهٗ رَبِّيْٓ اَمَدًا ﴿٢٥﴾

25. आप फ़रमा दें : मैं नहीं जानता कि जिस (रोज़े क़ियामत) का तुम से वा'दा किया जा रहा है वोह क़रीब है या उसके लिए मेरे रब ने तवील मुद्दत मुक़र्रर फ़रमा दी है।

عٰلِمُ الْغَيْبِ فَلَا يُظْهِرُ عَلٰى غَيْبِهٖٓ اَحَدًا ﴿٢٦﴾ لا

26. (वोह) ग़ैब का जाननेवाला है, पस वोह अपने ग़ैब पर किसी (आ़म शख़्स) को मुत्तला' नहीं फ़रमाता।

اِلَّا مَنِ ارْتَضٰى مِنْ رَّسُوْلٍ فَاِنَّهٗ يَسْلُكُ مِنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَ مِنْ خَلْفِهٖ رَصَدًا ﴿٢٧﴾ لا

27. सिवाए अपने पसन्दीदह रसूलों के (उन्हीं को मुत्तला' अ़लल ग़ैब करता है क्यों कि येह ख़ास्सए नुबुव्वत और मो'जिज़ए रिसालत है), तो बेशक वोह उस (रसूल ﷺ) के आगे और पीछे (इल्मे ग़ैब की हिफ़ाज़त के लिए) निगहबान मुक़र्रर फ़रमा देता है।

لِّيَعْلَمَ اَنْ قَدْ اَبْلَغُوْا رِسٰلٰتِ رَبِّهِمْ وَ اَحَاطَ بِمَا لَدَيْهِمْ وَاَحْصٰى كُلَّ شَيْءٍ عَدَدًا ﴿٢٨﴾ ع ٢ ٩ ١٢

28. ताकि अल्लाह (इस बातको) ज़ाहिर फ़रमा दे कि बेशक उन (रसूलों) ने अपने रब के पैग़ामात पहुंचा दिए, और (अह़कामाते इलाहिय्या और उ़लूमे ग़ैबिय्या में से) जो कुछ उनके पास है अल्लाहने (पेहले ही से) उसका इह़ाता फ़रमा रख्खा है, और उसने हर चीज़ की गिन्ती शुमार कर रख्खी है।

आयातुहा 20 | 73 सूरतुल मुज़्ज़म्मिलि मक्किय्यतुन 3 | रुकूआ़तुहा 2

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रह़म फ़रमाने वाला है।

يٰٓاَيُّهَا الْمُزَّمِّلُ ۙ﴿۱﴾
قُمِ الَّيْلَ اِلَّا قَلِيْلًا ۙ﴿۲﴾

1. ऐ कमली की झुरमुटवाले (ह़बीब!)

2. आप रात को (नमाज़ में) क़ियाम फ़रमाया करें मगर थोड़ी देर (के लिए)।

نِّصْفَهٗٓ اَوِ انْقُصْ مِنْهُ قَلِيْلًا ۙ﴿۳﴾
اَوْ زِدْ عَلَيْهِ وَ رَتِّلِ الْقُرْاٰنَ
تَرْتِيْلًا ؕ﴿۴﴾

3. आधी रात या उससे थोड़ा कम कर दें।

4. या उस पर कुछ ज़ियादह करें और क़ुरआन खूब ठहर ठहर कर पढ़ा करें।

اِنَّا سَنُلْقِيْ عَلَيْكَ قَوْلًا ثَقِيْلًا ﴿۵﴾
اِنَّ نَاشِئَةَ الَّيْلِ هِيَ اَشَدُّ وَطْاً وَّ
اَقْوَمُ قِيْلًا ؕ﴿۶﴾

5. हम अ़नक़रीब आप पर एक भारी फ़रमान नाज़िल करेंगे।

6. बेशक रात का उठना (नफ़्स को) सख़्त पामाल करता है और (दिलो दिमाग़ की यकसूई के साथ) ज़बान से सीधी बात निकालता है।

اِنَّ لَكَ فِي النَّهَارِ سَبْحًا طَوِيْلًا ؕ﴿۷﴾

7. बेशक आप के लिए दिन में बहुत सी मसरूफ़ियात होती हैं।

وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ وَ تَبَتَّلْ اِلَيْهِ
تَبْتِيْلًا ؕ﴿۸﴾

8. और आप अपने रब का नाम ज़िक्र करते रहें और (अपने क़ल्बो बातिन में) हर एक से टूट कर उसी के हो रहें।

رَبُّ الْمَشْرِقِ وَ الْمَغْرِبِ لَآ اِلٰهَ
اِلَّا هُوَ فَاتَّخِذْهُ وَكِيْلًا ﴿۹﴾

9. वोह मशरिक़ो मग़रिब का मालिक है, उसके सिवा कोई मा'बूद नहीं, सो उसीको (अपना) कारसाज़ बना लें।

وَاصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَاهْجُرْهُمْ
هَجْرًا جَمِيْلًا ﴿۱۰﴾

10. और आप उन (बातों (पर) सब्र करें जो कुछ वोह (कुफ़्फ़ार) केहते हैं, और निहायत ख़ूबसूरती के साथ उनसे कनारा कश हो जाएं।

وَذَرْنِي وَالْمُكَذِّبِينَ أُولِي النَّعْمَةِ
وَمَهِّلْهُمْ قَلِيلًا ﴿١١﴾

11. और आप मुझे और झुटलाने वाले सरमाया दारों को (इन्तिक़ाम लेने के लिए) छोड़ दें और उन्हें थोड़ी सी मोहलत दे दें (ताकि उनके आ'माले बद अपनी इन्तिहा को पहुंच जाएं।

إِنَّ لَدَيْنَا أَنْكَالًا وَجَحِيمًا ﴿١٢﴾

12. बेशक हमारे पास भारी बेड़ियां और (दोज़ख़ की) भड़कती हुई आग है।

وَطَعَامًا ذَا غُصَّةٍ وَعَذَابًا أَلِيمًا ﴿١٣﴾

13. और ह़लक़ में अटक जानेवाला खाना और निहायत दर्दनाक अज़ाब है।

يَوْمَ تَرْجُفُ الْأَرْضُ وَالْجِبَالُ وَ
كَانَتِ الْجِبَالُ كَثِيبًا مَهِيلًا ﴿١٤﴾

14. जिस दिन ज़मीन और पहाड़ ज़ोर से लरज़ने लगेंगे और पहाड़ बिखरी रेत के टीले हो जाएंगे।

إِنَّا أَرْسَلْنَا إِلَيْكُمْ رَسُولًا شَاهِدًا
عَلَيْكُمْ كَمَا أَرْسَلْنَا إِلَىٰ فِرْعَوْنَ
رَسُولًا ﴿١٥﴾

15. बेशक हमने तुम्हारी तरफ़ एक रसूल (ﷺ) भेजा है जो तुम पर (अहवाल का मुशाहिदा फ़रमा कर) गवाही देनेवाला है, जैसा कि हमने फ़िरऔन की तरफ़ एक रसूल भेजा था।

فَعَصَىٰ فِرْعَوْنُ الرَّسُولَ فَأَخَذْنَاهُ
أَخْذًا وَبِيلًا ﴿١٦﴾

16. पस फ़िरऔन ने उस रसूल (عليه السلام) की ना फ़रमानी की, सो हमने हलाकत अंगेज़ गिरफ़्त में पकड़ लिया।

فَكَيْفَ تَتَّقُونَ إِنْ كَفَرْتُمْ يَوْمًا
يَجْعَلُ الْوِلْدَانَ شِيبًا ﴿١٧﴾

17. अगर तुम कुफ़्र करते रहो तो उस दिन (के अ़ज़ाब) से कैसे बचोगे जो बच्चों को बूढ़ा कर देगा।

السَّمَاءُ مُنْفَطِرٌ بِهِ ۚ كَانَ وَعْدُهُ
مَفْعُولًا ﴿١٨﴾

18. (जिस दिन की) शिद्दत के बाइस आस्मान फट जाएगा, उसका वा'दा पूरा हो कर रहेगा।

إِنَّ هَٰذِهِ تَذْكِرَةٌ ۖ فَمَنْ شَاءَ
اتَّخَذَ إِلَىٰ رَبِّهِ سَبِيلًا ﴿١٩﴾ ع

19. बेशक येह (क़ुरआन) नसीहत है, पस जो शख़्स चाहे अपने रब तक पहुंचने का रास्ता इख़्तियार कर ले।

إِنَّ رَبَّكَ يَعْلَمُ أَنَّكَ تَقُومُ أَدْنَىٰ
مِنْ ثُلُثَيِ اللَّيْلِ وَنِصْفَهُ وَثُلُثَهُ وَ

20. बेशक आप का रब जानता है कि आप (कभी) दो तिहाई शब के क़रीब और (कभी) निस्फ़ शब और

طَآىِٕفَةٌ مِّنَ الَّذِيْنَ مَعَكَ ؕ وَاللّٰهُ يُقَدِّرُ الَّيْلَ وَ النَّهَارَ ؕ عَلِمَ اَنْ لَّنْ تُحْصُوْهُ فَتَابَ عَلَيْكُمْ فَاقْرَءُوْا مَا تَيَسَّرَ مِنَ الْقُرْاٰنِ ؕ عَلِمَ اَنْ سَيَكُوْنُ مِنْكُمْ مَّرْضٰى ۙ وَ اٰخَرُوْنَ يَضْرِبُوْنَ فِى الْاَرْضِ يَبْتَغُوْنَ مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ ۙ وَاٰخَرُوْنَ يُقَاتِلُوْنَ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۖ فَاقْرَءُوْا مَا تَيَسَّرَ مِنْهُ ۙ وَ اَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَ اَقْرِضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا ؕ وَ مَا تُقَدِّمُوْا لِاَنْفُسِكُمْ مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوْهُ عِنْدَ اللّٰهِ هُوَ خَيْرًا وَّ اَعْظَمَ اَجْرًا ؕ وَاسْتَغْفِرُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۲۰﴾ ع ۲ ۱۴

(कभी) एक तिहाई शब (नमाज़ में) क़ियाम करते हैं, और उन लोगों की एक जमाअ़त (भी) जो आपके साथ हैं (क़ियाम में शरीक होती है) और अल्लाह ही रात और दिन (के घटने और बढ़ने) का सह़ीह़ अंदाज़ह रखता है, वोह जानता कि तुम हरगिज़ उसके इह़ाते की ताक़त नहीं रखते, तो उसने तुम पर (मशक़्क़त में तख़्फ़ीफ़ कर के) मुआ़फ़ी दे दी, पस जितना आसानी से हो सके क़ुरआन पढ़ लिया करो, वोह जानता है कि तुम में से (बा'ज़ लोग) बीमार होंगे और (बा'ज़) दूसरे लोग ज़मीन में सफ़र करेंगे ता कि अल्लाह का फ़ज़्ल तलाश करें और (बा'ज़) दीगर अल्लाह की राह में जंग करेंगे, सो जितना आसानी से हो सके उतना (ही) पढ़ लिया करो, और नमाज़ क़ाइम रख्खो और ज़कात देते रहो और अल्लाह के क़र्ज़े ह़सन दिया करो, और जो भलाई तुम अपने लिए आगे भेजोगे उसे अल्लाह के ह़ुज़ूर बेहतर और अज्र में बुज़ुर्ग तर पा लोगे, और अल्लाह से बख़्शिश तलब करते रहो, अल्लाह बहुत बख़्शनेवाला और बेह़द रह़म फ़रमानेवाला है।

आयातुहा 56 | 74 सूरतुल मुद्दस्सिरु मक्किय्यतुन 4 | रुकूआ़तुहा 92

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फरमाने वाला है।

يٰۤاَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ ۙ﴿۱﴾

1. अय चादर ओढ़नेवाले (ह़बीब!)।

قُمْ فَاَنْذِرْ ۖ﴿۲﴾

2. उन्हें और (लोगों को अल्लाह का) डर सुनाएं।

وَرَبَّكَ فَكَبِّرْ ۝٣

3. और अपने रब की बड़ाई (और अज़मत) बयान फरमाएं।

وَثِيَابَكَ فَطَهِّرْ ۝٤

4. और अपने (ज़ाहिरो बातिन के) लिबास (पहले की तरह हमेशा) पाक रख्खें।

وَالرُّجْزَ فَاهْجُرْ ۝٥

5. और (हस्बे साबिक़ गुनाहों और) बुतों से अलग रहें।

وَلَا تَمْنُنْ تَسْتَكْثِرُ ۝٦

6. और (इस ग़रज़ से किसी पर) एहसान न करें कि इससे ज़ियादह के तालिब हों।

وَلِرَبِّكَ فَاصْبِرْ ۝٧

7. और आप अपने रब के लिए सब्र किया करें।

فَإِذَا نُقِرَ فِي النَّاقُورِ ۝٨

8. फिर जब (दोबारा) सूर में फूंक मारी जाएगी।

فَذَٰلِكَ يَوْمَئِذٍ يَوْمٌ عَسِيرٌ ۝٩

9. सो वोह दिन (या'नी रोज़े क़ियामत) बड़ा ही सख़्त दिन होगा।

عَلَى الْكَافِرِينَ غَيْرُ يَسِيرٍ ۝١٠

10. काफ़िरों पर हरगिज़ आसान न होगा।

ذَرْنِي وَمَنْ خَلَقْتُ وَحِيدًا ۝١١

11. आप मुझे और उस शख़्स को जिसे मैंने अकेला पैदा किया (इन्तिक़ाम के लिए) छोड़ दें।

وَجَعَلْتُ لَهُ مَالًا مَّمْدُودًا ۝١٢

12. और मैंने उसे बहुत वसीअ माल मुहय्या किया था।

وَبَنِينَ شُهُودًا ۝١٣

13. और (उसके सामने) हाज़िर रहनेवाले बेटे (दिए) थे।

وَمَهَّدتُّ لَهُ تَمْهِيدًا ۝١٤

14. और मैंने उसे (सामाने ऐशो इशरत में) खूब वुस्अत दी थी।

ثُمَّ يَطْمَعُ أَنْ أَزِيدَ ۝١٥

15. फिर (भी) वोह हिर्स रखता था कि मैं और ज़ियादह करूं।

كَلَّا ۖ إِنَّهُ كَانَ لِآيَاتِنَا عَنِيدًا ۝١٦

16. हरगिज़ (ऐसा) न होगा, बेशक वोह हमारी आयतों का दुश्मन रहा है।

سَأُرْهِقُهُ صَعُودًا ۝١٧

17. अनक़रीब मैं उसे सख़्त मशक़्क़त (के अज़ाब) की तक्लीफ़ दूंगा।

إِنَّهُ فَكَّرَ وَقَدَّرَ ۝١٨

18. बेशक उसने सोच बिचार की और (दिल में) एक तज्वीज़ मुक़र्रर कर ली।

فَقُتِلَ كَيْفَ قَدَّرَ ﴿١٩﴾

19. बस उस पर (अल्लाह की) मार (या'नी ला'नत) हो, उसने कैसी तजवीज़ की।

ثُمَّ قُتِلَ كَيْفَ قَدَّرَ ﴿٢٠﴾

20. उस पर फिर (अल्लाह की) मार (या'नी ला'नत) हो, उसने कैसी तजवीज़ की।

ثُمَّ نَظَرَ ﴿٢١﴾

21. फिर उसने (अपनी तजवीज़ पर दोबारह) ग़ौर किया।

ثُمَّ عَبَسَ وَبَسَرَ ﴿٢٢﴾

22. फिर तेवरी चढ़ाई और मुंह बिगाडा।

ثُمَّ أَدْبَرَ وَاسْتَكْبَرَ ﴿٢٣﴾

23. फिर (हक़ से) पीठ फेर ली और तकब्बुर किया।

فَقَالَ إِنْ هَٰذَا إِلَّا سِحْرٌ يُؤْثَرُ ﴿٢٤﴾

24. फिर केहने लगा येह (कुरआन) जादू के सिवा कुछ नहीं जो (अगले जादूगरों से) नक़्ल होता चला आ रहा है।

إِنْ هَٰذَا إِلَّا قَوْلُ الْبَشَرِ ﴿٢٥﴾

25. येह (कुरआन) बजुज़ इन्सान के कलाम के (और कुछ) नहीं।

سَأُصْلِيهِ سَقَرَ ﴿٢٦﴾

26. मैं अ़नक़रीब उसे दोज़ख़ में झोंक दूंगा।

وَمَا أَدْرَاكَ مَا سَقَرُ ﴿٢٧﴾

27. और आपको किसने बताया है कि सक़र कया है।

لَا تُبْقِي وَلَا تَذَرُ ﴿٢٨﴾

28. वोह (ऐसी आग है जो) न बाक़ी रेहती है और न छोड़ती है।

لَوَّاحَةٌ لِّلْبَشَرِ ﴿٢٩﴾

29. (वोह) जिस्मानी खाल को झुल्सा कर सियाह कर देने वाली है।

عَلَيْهَا تِسْعَةَ عَشَرَ ﴿٣٠﴾

30. उस पर उन्नीस (19 फ़रिश्ते दारोग़े मुक़र्रर) हैं।

وَمَا جَعَلْنَا أَصْحَابَ النَّارِ إِلَّا مَلَائِكَةً ۙ وَمَا جَعَلْنَا عِدَّتَهُمْ إِلَّا فِتْنَةً لِّلَّذِينَ كَفَرُوا ۙ لِيَسْتَيْقِنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ وَيَزْدَادَ الَّذِينَ آمَنُوا إِيمَانًا ۙ وَلَا يَرْتَابَ

31. और हमने दोज़ख़ के दारोग़े सिर्फ़ फ़रिश्ते ही मुक़र्रर किए हैं और हमने उनकी गिन्ती काफ़िरों के लिए महज़ आज़माइश के तौर पर मुक़र्रर की है ताकि अहले किताब यक़ीन कर लें (कि कुरआन और नुबुव्वते मुहम्मदी ﷺ हक़ है क्यों कि उनकी कुतुब में भी येही ता'दाद बयान की गई थी) और अहले ईमान का ईमान (इस तस्दीक़ से) मज़ीद बढ़ जाए और अहले किताब और

الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ وَالْمُؤْمِنُوْنَ ۙ
وَ لِيَقُوْلَ الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ
مَّرَضٌ وَّالْكٰفِرُوْنَ مَاذَآ اَرَادَ
اللّٰهُ بِهٰذَا مَثَلًا ؕ كَذٰلِكَ يُضِلُّ
اللّٰهُ مَنْ يَّشَآءُ وَ يَهْدِيْ مَنْ
يَّشَآءُ ؕ وَمَا يَعْلَمُ جُنُوْدَ رَبِّكَ اِلَّا
هُوَ ؕ وَمَا هِيَ اِلَّا ذِكْرٰى لِلْبَشَرِ ﴿٣١﴾ ع ٣١ ١٥

मोमिनीन (उसकी हक़्क़ानिय्यत में) शक न कर सकें, और ताकि वोह लोग जिनके दिलों में (निफ़ाक़ की) बीमारी है और कुफ़्फ़ार येह कहे कि इस (ता'दाद की) मिसाल से अल्लाह की मुराद क्या है? इसी तरह अल्लाह (एक ही बात से) जिसे चाहता है गुमराह ठेहराता है और जिसे चाहता है हिदायत फ़रमाता है, और आपके रब के लश्करों को उसके सिवा कोई नहीं जानता, और येह (दोज़ख़ का बयान) इन्सान की नसीहत के लिए है।

كَلَّا وَالْقَمَرِ ﴿٣٢﴾

32. हां,चाँद की क़सम (जिसका घटना, बढ़ना और ग़ाइब हो जाना गवाही है)।

وَالَّيْلِ اِذْ اَدْبَرَ ﴿٣٣﴾

33. और रात की क़सम जब वोह पीठ फेर कर रुख़्सत होने लगे।

وَالصُّبْحِ اِذَآ اَسْفَرَ ﴿٣٤﴾

34. और सुब्ह् की क़सम जब वोह रौशन होजाए।

اِنَّهَا لَاِحْدَى الْكُبَرِ ﴿٣٥﴾

35. बेशक येह (दोज़ख) बहुत बड़ी आफ़तों में से एक है।

نَذِيْرًا لِّلْبَشَرِ ﴿٣٦﴾

36. इन्सान को डराने वाली है।

لِمَنْ شَآءَ مِنْكُمْ اَنْ يَّتَقَدَّمَ اَوْ
يَتَاَخَّرَ ﴿٣٧﴾

37. (या'नी) उस शख़्स के लिए जो तुम में से (नेकी में) आगे बढ़ना चाहे या जो (बदी में फंस कर) पीछे रेह जाए।

كُلُّ نَفْسٍۭ بِمَا كَسَبَتْ رَهِيْنَةٌ ﴿٣٨﴾

38. हर शख़्स उन (आ'माल) के बदले जो उसने कमा रखे हैं गिरवी है।

اِلَّآ اَصْحٰبَ الْيَمِيْنِ ﴿٣٩﴾

39. सिवाए दाएं जानिब वालों के।

فِيْ جَنّٰتٍ ؕ يَتَسَآءَلُوْنَ ﴿٤٠﴾ مع ١٦

40. (वोह) बाग़ात में होंगे, और आपस में पूछते होंगे।

عَنِ الْمُجْرِمِيْنَ ۙ﴿۴۱﴾

41. मुज्रिमों के बारे में।

مَا سَلَكَكُمْ فِيْ سَقَرَ ﴿۴۲﴾

42. (और कहेंगे :)तुम्हें क्या चीज़ दोज़ख़ में ले गई।

قَالُوْا لَمْ نَكُ مِنَ الْمُصَلِّيْنَ ۙ﴿۴۳﴾

43. वोह कहेंगे : हम नमाज़ पढ़नेवालों में न थे।

وَلَمْ نَكُ نُطْعِمُ الْمِسْكِيْنَ ۙ﴿۴۴﴾

44. और हम मोहताजों को खाना नहीं खिलाते थे।

وَكُنَّا نَخُوْضُ مَعَ الْخَآئِضِيْنَ ۙ﴿۴۵﴾

45. और बेहूदा मशाग़िल वालों के साथ (मिल कर) हम भी बेहूदा मश्ग़लों में पड़े रेहते थे।

وَكُنَّا نُكَذِّبُ بِيَوْمِ الدِّيْنِ ۙ﴿۴۶﴾

46. और हम रोज़े जज़ा को झुटलाया करते थे।

حَتّٰٓى اَتٰىنَا الْيَقِيْنُ ؕ﴿۴۷﴾

47. यहां तक कि हम पर जिसका आना यक़ीनी था (वोह मौत) आ पहुंची।

فَمَا تَنْفَعُهُمْ شَفَاعَةُ الشّٰفِعِيْنَ ؕ﴿۴۸﴾

48. सो (अब) शफ़ाअ़त करनेवालों की शफ़ाअ़त उन्हें कोई नफ़ा' न पहुंचाएगी।

فَمَا لَهُمْ عَنِ التَّذْكِرَةِ مُعْرِضِيْنَ ۙ﴿۴۹﴾

49. तो उन (कुफ़्फ़ार) को क्या हो गया है के (फिर भी) नसीह़त से रू गर्दानी किए हुए हैं।

كَاَنَّهُمْ حُمُرٌ مُّسْتَنْفِرَةٌ ۙ﴿۵۰﴾

50. गोया वोह बिदके हुए (वह़शी) गधे हैं।

فَرَّتْ مِنْ قَسْوَرَةٍ ؕ﴿۵۱﴾

51. जो शेर से भाग खड़े हुए।

بَلْ يُرِيْدُ كُلُّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ اَنْ يُّؤْتٰى صُحُفًا مُّنَشَّرَةً ۙ﴿۵۲﴾

52. बल्कि उनमें से हर एक शख़्स येह चाह्ता है कि उसे (बराहे रास्त) खुले हुए (आस्मानी) सह़ीफ़े दिए जाएं।

كَلَّا ؕ بَلْ لَّا يَخَافُوْنَ الْاٰخِرَةَ ؕ﴿۵۳﴾

53. ऐसा हरगिज़ मुम्किन नहीं, बल्कि (ह़क़ीक़त येह है कि) वोह लोग आख़िरत से डरते ही नहीं।

كَلَّآ اِنَّهٗ تَذْكِرَةٌ ۚ﴿۵۴﴾

54. कुछ शक नहीं कि येह (कुरआन) नसीह़त है।

فَمَنْ شَآءَ ذَكَرَهٗ ؕ﴿۵۵﴾

55. पस जो चाहे उसे याद रख्खे।

وَمَا يَذْكُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ ؕ

56. और येह लोग (इसे)याद नहीं रख्खेंगे मगर जब

هُوَ اَهۡلُ التَّقۡوٰى وَاَهۡلُ الۡمَغۡفِرَةِ ﴿٥٦﴾ ع

अल्लाह चाहे, वोही तक़्वा (व परहेज़गारी) का मुस्तहिक़ है और मग़फ़िरत का मालिक है।

रुकूआतुहा 2 | 75 सूरतुल कियामति मक्किय्यतुन 31 | आयातुहा 40

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत महेरबान हमेशा रहम फरमाने वाला है।

لَاۤ اُقۡسِمُ بِيَوۡمِ الۡقِيٰمَةِ ﴿١﴾ لا

1. मैं क़सम खाता हूं रोज़े क़ियामत की।

وَلَاۤ اُقۡسِمُ بِالنَّفۡسِ اللَّوَّامَةِ ﴿٢﴾ ط

2. और मैं क़सम खाता हूं (बुराइयों पर) मलामत करने वाले नफ़्स की।

اَيَحۡسَبُ الۡاِنۡسَانُ اَلَّنۡ نَّجۡمَعَ عِظَامَهٗ ﴿٣﴾ ط

3. क्या इन्सान येह ख़याल करता है कि हम उसकी हड्डियों को (जो मरने के बा'द रेज़ा रेज़ा हो कर बिखर जाएंगी) हरगिज़ इकठ्ठा नहीं करेंगे।

بَلٰى قٰدِرِيۡنَ عَلٰۤى اَنۡ نُّسَوِّىَ بَنَانَهٗ ﴿٤﴾

4. क्यों नहीं ! हम तो इस बात पर भी क़ादिर हैं के उसकी उंगलियों के एक एक जोड़ और पोरों तक को दुरुस्त कर दें।

بَلۡ يُرِيۡدُ الۡاِنۡسَانُ لِيَفۡجُرَ اَمَامَهٗ ﴿٥﴾ ج

5. बल्कि इन्सान येह चाहता है कि अपने आगे (की ज़िन्दगी में) भी गुनाह करता रहे।

يَسۡـَٔلُ اَيَّانَ يَوۡمُ الۡقِيٰمَةِ ﴿٦﴾ ط

6. वोह (ब-अंदाज़े तमस्ख़ुर) पूछता है कि क़ियामत का दिन कब होगा।

فَاِذَا بَرِقَ الۡبَصَرُ ﴿٧﴾ لا

7. फिर जब आंखें चौंध्या जाएंगी।

وَخَسَفَ الۡقَمَرُ ﴿٨﴾ لا

8. और चांद (अपनी) रौशनी खो देगा।

وَجُمِعَ الشَّمۡسُ وَالۡقَمَرُ ﴿٩﴾ لا

9. और सूरज और चांद इकठ्ठे (बे नूर) हो जाएंगे।

يَقُوۡلُ الۡاِنۡسَانُ يَوۡمَئِذٍ اَيۡنَ الۡمَفَرُّ ﴿١٠﴾ ج

10. उस वक़्त इन्सान पुकार उठ्ठेगा कि भाग जाने का ठिकाना कहां है।

كَلَّا لَا وَزَرَ ﴿١١﴾ ط

11. हर गिज़ नहीं, कोई जाए पनाह नहीं है।

إِلَىٰ رَبِّكَ يَوْمَئِذٍ الْمُسْتَقَرُّ ﴿١٢﴾

12. उस दिन आपके रब के पास ही क़रार गाह होगी।

يُنَبَّأُ الْإِنسَانُ يَوْمَئِذٍ بِمَا قَدَّمَ وَأَخَّرَ ﴿١٣﴾

13. उस दिन इन्सान उन (आ'माल) से ख़बरदार किया जाएगा जो उसने आगे भेजे थे और जो (असरात अपनी मौत के बाद) पीछे छोड़े थे।

بَلِ الْإِنسَانُ عَلَىٰ نَفْسِهِ بَصِيرَةٌ ﴿١٤﴾

14. बल्कि इन्सान अपने (अह्वाले) नफ़्स पर (ख़ुद ही) आगाह होगा।

وَلَوْ أَلْقَىٰ مَعَاذِيرَهُ ﴿١٥﴾

15. अगरचे वोह अपने तमाम उ़ज़्र पेश करेगा।

لَا تُحَرِّكْ بِهِ لِسَانَكَ لِتَعْجَلَ بِهِ ﴿١٦﴾

16. (ऐ ह़बीब!) आप (क़ुरआन को याद करने की) जल्दी में (नुज़ूले वह़ी के साथ) अपनी ज़बान को ह़रकत न दिया करें।

إِنَّ عَلَيْنَا جَمْعَهُ وَقُرْآنَهُ ﴿١٧﴾

17. बेशक उसे (आपके सीने में)जमा' करना और उसे (आपकी ज़बान से) पढ़ाना हमारा ज़िम्मा है।

فَإِذَا قَرَأْنَاهُ فَاتَّبِعْ قُرْآنَهُ ﴿١٨﴾

18. फिर जब हम उसे (ज़बाने जिब्रील से) पढ चुकें तो आप उस पढ़े हुए की पैरवी करें।

ثُمَّ إِنَّ عَلَيْنَا بَيَانَهُ ﴿١٩﴾

19. फिर बेशक उस (के मआ़नी) का खोल कर बयान करना हिमारा ही ज़िम्मा है।

كَلَّا بَلْ تُحِبُّونَ الْعَاجِلَةَ ﴿٢٠﴾

20. ह़क़ीक़त येह है (ऐ कुफ़्फ़ार!) तुम जल्द मिलनेवाली (दुनिया) को मह़बूब रखते हो।

وَتَذَرُونَ الْآخِرَةَ ﴿٢١﴾

21 . और तुम आख़िरत को छोड़े हुए हो।

وُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ نَّاضِرَةٌ ﴿٢٢﴾

22. बहुत से चेहरे उस दिन शगुफ़्ता-व-तरो ताज़ह होंगे।

إِلَىٰ رَبِّهَا نَاظِرَةٌ ﴿٢٣﴾

23. और (बिला ह़िजाब) अपने रब (के हुस्नो जमाल) को तक रहे होंगे।

وَوُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ بَاسِرَةٌ ﴿٢٤﴾

24. और कितने ही चेहरे उस दिन बिगड़ी हुई हालत में (मायूस और सियाह) होंगे।

تَظُنُّ اَنْ يُّفْعَلَ بِهَا فَاقِرَةٌ ﴿٢٥﴾

25. येह गुमान करते होंगे कि उनके साथ अैसी सख़्ती की जाएगी जो उनकी कमर तोड़ देगी।

كَلَّآ اِذَا بَلَغَتِ التَّرَاقِيَ ﴿٢٦﴾

26. नहीं नहीं, जब जान गले तक पहुंच जाएगी।

وَقِيْلَ مَنْ ۜ رَاقٍ ﴿٢٧﴾

27. और कहा जा रहा हो कि (इस वक़्त) कौन है झाड़ फूंक से इलाज करनेवाला (जिससे शिफ़ा याबी कराएं।

وَّظَنَّ اَنَّهُ الْفِرَاقُ ﴿٢٨﴾

28. और (जान देनेवाला) समझ ले कि (अब सब से) जुदाई है।

وَالْتَفَّتِ السَّاقُ بِالسَّاقِ ﴿٢٩﴾

29. और पिंडली से पिंडली टपकने लगेगी।

اِلٰى رَبِّكَ يَوْمَئِذِ ِۨالْمَسَاقُ ﴿٣٠﴾ ع ١٧

30. तो उस दिन आप के रब की तरफ़ जाना होता है।

فَلَا صَدَّقَ وَلَا صَلّٰى ﴿٣١﴾

31. तो (कितनी बद नसीबी है कि) उसने न (रसूल ﷺ की बातों की) तस्दीक़ की न नमाज़ पढ़ी।

وَلٰكِنْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ﴿٣٢﴾

32. बल्कि वोह झुटलाता रहा और रू गर्दानी करता रहा।

ثُمَّ ذَهَبَ اِلٰٓى اَهْلِهٖ يَتَمَطّٰى ﴿٣٣﴾

33. फिर अपने अहले ख़ाना की तरफ़ अकड़ कर चला।

اَوْلٰى لَكَ فَاَوْلٰى ﴿٣٤﴾

34. तुम्हारे लिए (मरते वक़्त) तबाही है, फिर (क़ब्र में) तबाही है।

ثُمَّ اَوْلٰى لَكَ فَاَوْلٰى ﴿٣٥﴾

35. फिर तुम्हारे लिए (रोज़े क़ियामत) हलाकत है, फिर (दोज़ख की) हलाकत है।

اَيَحْسَبُ الْاِنْسَانُ اَنْ يُّتْرَكَ سُدًى ﴿٣٦﴾

36. क्या इन्सान येह ख़याल करता है कि उसे बेकार (बिग़ैर हिसाबो किताब के) छोड़ दिया जाएगा।

اَلَمْ يَكُ نُطْفَةً مِّنْ مَّنِيٍّ يُّمْنٰى ﴿٣٧﴾

37. क्या वोह (अपनी इब्तिदा में) मनी का एक क़त्रा न था जो (औरत के रहम में) टपका दिया जाता है।

ثُمَّ كَانَ عَلَقَةً فَخَلَقَ فَسَوّٰى ﴿٣٨﴾

38. फिर वोह (रहम में जाल की तरह जमा हुआ) एक मुअ़ल्लक़ वजूद बन गया, फिर उसने (तमाम जिस्मानी आ'ज़ा की इब्तेदाई शक्ल को उस वजूद में) पैदा फरमाया, फिर उस ने (उन्हें) दुरुस्त किया।

فَجَعَلَ مِنْهُ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ
وَالْأُنْثَىٰ ﴿٣٩﴾

39. फिर येह के उस ने उसी नुत्फे ही के ज़रिये दो किस्में बनाईं : मर्द और औरत.

أَلَيْسَ ذَٰلِكَ بِقَادِرٍ عَلَىٰ أَنْ يُحْيِيَ
الْمَوْتَىٰ ﴿٤٠﴾ ع

40. तो कया वोह इस बात पर कादिर नहीं के मुर्दों को फिर से ज़िंदा कर दे.

रुकूआतुहा 2 | 76 सूरतुद दहरि म-दनिय्यतुन 76 | आयातुहा 31

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत महेरबान हमेशा रहम फरमाने वाला है।

هَلْ أَتَىٰ عَلَى الْإِنْسَانِ حِينٌ مِنَ
الدَّهْرِ لَمْ يَكُنْ شَيْئًا مَذْكُورًا ﴿١﴾

1. बेशक इन्सान पर ज़मामे का एक ऐसा वक्त भी गुज़र चुका है को वोह कोई काबिले ज़िक्र चीज़ ही न था।

إِنَّا خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنْ نُطْفَةٍ
أَمْشَاجٍ نَبْتَلِيهِ فَجَعَلْنَاهُ سَمِيعًا
بَصِيرًا ﴿٢﴾

2. बेशक हमने इन्सान को मखलूत नुत्फा से पैदा फरमाया जिस हम(तवल्लुद तक एक मरहले से दूसरे मरहले की तरफ)पलटते और जाचंते रेहते हैं,पस हमने उसे(तर्तीब से)सुन्ने वाला(फिर)देखने वाला बनाया।

إِنَّا هَدَيْنَاهُ السَّبِيلَ إِمَّا شَاكِرًا
وَإِمَّا كَفُورًا ﴿٣﴾

3. बेशक हमने उसे उसे हक्को बातिल में तमीज़ करने के लिये शुऊरो बसीरत की)काह भी दिखाा दी,(अब)ख्वाह वोह शुक्र गुज़ार होजो या ना शुक्र गुज़ार।

إِنَّا أَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ سَلَاسِلَ
وَأَغْلَالًا وَسَعِيرًا ﴿٤﴾

4. बशक हमने काफिरों के लिये(पावं की)ज़ंजीरें और(गरदन के)(तोक और दोज़ख की)देहेक्ती आग तैयार कर रखखी है।

إِنَّ الْأَبْرَارَ يَشْرَبُونَ مِنْ كَأْسٍ
كَانَ مِزَاجُهَا كَافُورًا ﴿٥﴾

5. बेशक मुख़्लिस और इताअ़त गुज़ार (शराबे तहूर के) ऐसे जाम पियेंगे जिसमें (खुश्बू, रंगत और लिज़्ज़त बढ़ाने के लिए) काफ़ूर की आमेज़िश होगी।

عَيْنًا يَشْرَبُ بِهَا عِبَادُ اللَّهِ

6. (काफ़ूर जन्नत का) एक चश्मा है जिससे (ख़ास)

يُفَجِّرُوْنَهَا تَفْجِيْرًا ۝٦

बन्दगाने ख़ुदा (या'नी अवलिया अल्लाह) पिया करेंगे (और) जहां चाहेंगे (दूसरों को पिलाने के लिए) उसे छोटी छोटी नेहरों में बहा कर (भी) ले जाएंगे।

يُوْفُوْنَ بِالنَّذْرِ وَيَخَافُوْنَ يَوْمًا كَانَ شَرُّهٗ مُسْتَطِيْرًا ۝٧

7 (येह बन्दगान ख़ास वोह हैं) जो (अपनी) नज़्रें पूरी करते हैं और उस दिनसे डरते हैं जिसकी सख़्ती ख़ूब फ़ैल जानेवाली है।

وَ يُطْعِمُوْنَ الطَّعَامَ عَلٰى حُبِّهٖ مِسْكِيْنًا وَّيَتِيْمًا وَّاَسِيْرًا ۝٨

8. और (अपना) खाना अल्लाह की मुहब्बत में (ख़ुद उसकी तलबो ह़ाजत होने के बावजूद ईसारन) मोह़ताज को और यतीम को और क़ैदी को खिलाते हैं।

اِنَّمَا نُطْعِمُكُمْ لِوَجْهِ اللّٰهِ لَا نُرِيْدُ مِنْكُمْ جَزَآءً وَّلَا شُكُوْرًا ۝٩

9. (और केहते हैं) कि हम तो मह़ज़ अल्लाह की रज़ा के लिए तुम्हें खिला रहे हैं, न तुम से किसी बदले के ख़्वास्तगार है और न शुक्र गुज़ारी के (ख़्वाहिश मंद)हैं।

اِنَّا نَخَافُ مِنْ رَّبِّنَا يَوْمًا عَبُوْسًا قَمْطَرِيْرًا ۝١٠

10. हमें तो अपने रब से उस दिन का ख़ौफ़ रेहता है जो (चेहरों को) निहायत सियाह (और) बदनुमा कर देनेवाला है।

فَوَقٰىهُمُ اللّٰهُ شَرَّ ذٰلِكَ الْيَوْمِ وَلَقّٰىهُمْ نَضْرَةً وَّسُرُوْرًا ۝١١ ۚ

11. पस अल्लाह उन्हें (ख़ौफ़े इलाही के सबब से) उस दिनकी सख़्ती से बचा लेगा और उन्हें (चेहरों पर) रौनक़ व ताज़गी और (दिलों में) सुरूरो मसर्रत बख़्शेगा।

وَ جَزٰىهُمْ بِمَا صَبَرُوْا جَنَّةً وَّحَرِيْرًا ۝١٢ ۙ

12. और इस बातके इ़वज़ उन्होंने सब्र किया है (रेहने को) जन्नत और (पहनने को) रेशमी पोशाक अ़ता करेगा।

مُّتَّكِـِٕيْنَ فِيْهَا عَلَى الْاَرَآئِكِ ۚ لَا يَرَوْنَ فِيْهَا شَمْسًا وَّلَا زَمْهَرِيْرًا ۝١٣ ۚ

13. येह लोग उसमें तख़्तों पर तक्ये लगाए बैठे होंगे, न वहां धूप की तपिश पाएंगे और न सरदी की शिद्दत।

وَدَانِيَةً عَلَيْهِمْ ظِلٰلُهَا وَذُلِّلَتْ قُطُوْفُهَا تَذْلِيْلًا ۝١٤

14. और (जन्नत के दरख़्तों के) साए उन पर झुक रहें होंगे और उनके (मेवों के) गुछ्छे झुक कर लटक रहे होंगे।

وَيُطَافُ عَلَيْهِمْ بِاٰنِيَةٍ مِّنْ فِضَّةٍ وَّ
اَكْوَابٍ كَانَتْ قَوَارِيْرَا۠ ﴿١٥﴾

15. और (खुद्दाम) उनके गिर्द चांदी के बरतन और (साफ़ सुथरे) शीशे के गिलास लिए फिरते होंगे।

قَوَارِيْرَا۠ مِنْ فِضَّةٍ قَدَّرُوْهَا
تَقْدِيْرًا ﴿١٦﴾

16. और शीशे भी चांदी के (बने) होंगे जिन्हें उन्होंने (हर एक तलब के मुताबिक़) ठीक ठीक अंदाज़े से भरा होगा

قرء حفص بغير الالف فى الوصل فيهما و وقف على الاول بالف وعلى الثانى بغير الالف ١٢

وَ يُسْقَوْنَ فِيْهَا كَاْسًا كَانَ
مِزَاجُهَا زَنْجَبِيْلًا ۚ﴿١٧﴾

17. और उन्हें वहां (शराबे तहूर के) ऐसे जाम पिलाए जोंगे जिनमें ज़नजबील की आमेज़श होगी।

عَيْنًا فِيْهَا تُسَمّٰى سَلْسَبِيْلًا ﴿١٨﴾

18. (ज़नजबील) उस (जन्नत)में एक ऐसा चश्मा है जिसका नाम सल्सबील है रख्खा गया है।

وَيَطُوْفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُوْنَ ۚ
اِذَا رَاَيْتَهُمْ حَسِبْتَهُمْ لُؤْلُؤًا
مَّنْثُوْرًا ﴿١٩﴾

19. और उनके इर्द गिर्द ऐसे (मा'सूम) बच्चे घूमते रहेंगे, जो हमेशा उसी हालमें रहेंगे, जब आप उन्हें देखेंगे तो उन्हें बिखरे हुए मोती गुमान करेंगे।

وَاِذَا رَاَيْتَ ثَمَّ رَاَيْتَ نَعِيْمًا وَّ
مُلْكًا كَبِيْرًا ﴿٢٠﴾

20. और जब आप (बहिश्त पर) नज़र डालेंगे तो वहां (कसरत से) ने'मतें और (हर तरफ़)बड़ी सल्तनत देखेंगे।

عٰلِيَهُمْ ثِيَابُ سُنْدُسٍ خُضْرٌ
وَّاِسْتَبْرَقٌ ۟ وَّحُلُّوْٓا اَسَاوِرَ مِنْ
فِضَّةٍ ۚ وَ سَقٰىهُمْ رَبُّهُمْ شَرَابًا
طَهُوْرًا ﴿٢١﴾

21. और (उनके जिस्मों) पर बारीक रेशम के सब्ज़ और दबीज़ अतलस के कपड़े होंगे, और उन्हें चांदी के कंगन पेहनाए जाएंगे और उनका रब उन्हें पाकीज़ा शराब पिलाएगा।

اِنَّ هٰذَا كَانَ لَكُمْ جَزَآءً وَّكَانَ
سَعْيُكُمْ مَّشْكُوْرًا ۧ﴿٢٢﴾

22. बेशक येह तुम्हारा सिला होगा और तुम्हारी मेहनत मक़्बूल हो चुकी।

ع ١ ٢٢ ١٩

اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْاٰنَ
تَنْزِيْلًا ۚ﴿٢٣﴾

23. बेशक हमने आप पर क़ुरआन थोड़ा थोड़ा कर के नाज़िल फरमाया है।

فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تُطِعْ مِنْهُمْ
اٰثِمًا اَوْ كَفُوْرًا ﴿٢٤﴾

24. सो आप अपने रबके हुक्म की ख़ातिर सब्र (जारी) रख्खें और उनमें से किसी काज़िबो गुनहगार या काफ़िरो ना शुक्रगुज़ार की बात पर कान न धरें।

وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ﴿٢٥﴾

25. और सुब्हो शाम अपने रब का नाम ज़िक्र कया करें।

وَمِنَ الَّيْلِ فَاسْجُدْ لَهٗ وَسَبِّحْهُ
لَيْلًا طَوِيْلًا ﴿٢٦﴾

26. और रात की कुछ घड़ियां उसके हुज़ूर सजदा रेज़ी किया करें और रात के (बक़िय्या) तवील हिस्से में उसकी तस्बीह़ किया करें।

اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ يُحِبُّوْنَ الْعَاجِلَةَ وَ
يَذَرُوْنَ وَرَآءَهُمْ يَوْمًا ثَقِيْلًا ﴿٢٧﴾

27. बेशक येह (तालिबाने दुनिया) जल्द मिलनेवाले मफ़ाद को अ़ज़ीज़ रखते हैं और सख़्त भारी दिन(की याद) को अपने पसे पुश्त छोड़े हुए हैं।

نَحْنُ خَلَقْنٰهُمْ وَشَدَدْنَآ اَسْرَهُمْ ۚ
وَاِذَا شِئْنَا بَدَّلْنَآ اَمْثَالَهُمْ
تَبْدِيْلًا ﴿٢٨﴾

28. (वोह नहीं सोचते कि) हम ही ने उन्हें पैदा फ़रमाया है और उनके जोड़ जोड़ को मज़बूत बनाया है, और हम जब चाहें (उन्हें) उन्ही जैसे लोगों से बदल डालें।

اِنَّ هٰذِهٖ تَذْكِرَةٌ ۚ فَمَنْ شَآءَ
اتَّخَذَ اِلٰى رَبِّهٖ سَبِيْلًا ﴿٢٩﴾

29. बेशक येह (क़ुरआन) नसीह़त है, सो जो कोई चाहे अपने रब की तरफ़ (पहुंचने का)रास्ता इख़्तियार कर ले।

وَمَا تَشَآءُوْنَ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ
اللّٰهُ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿٣٠﴾

30. और तुम ख़ुद नहीं चाह सक्ते सिवाए उसके जो अल्लाह चाहे, बेशक अल्लाह ख़ूब जाननेवाला बड़ी ह़िक्मत वाला है।

يُّدْخِلُ مَنْ يَّشَآءُ فِيْ رَحْمَتِهٖ ۭ وَ
الظّٰلِمِيْنَ اَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿٣١﴾ ع ٢ ٩ ٢٠

31. और वोह जिसे चाह्ता है अपनी रह़मत (के दाइरे) में दाख़िल फ़रमा देता है, और ज़ालिमों के लिए उसने दर्दनाक अ़ज़ाब तैयार कर रख्खा है।

आयातुहा 50 | 77 सूरतुल मुरसलाति मक्किय्यतुन 33 | रुकूआ़तुहा 2

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रह़म फ़रमानेवाला है।

وَالْمُرْسَلٰتِ عُرْفًا ﴿١﴾

1. नर्मो ख़ुशगवार हवाओं की क़सम जो पय दर पय चलती हैं।

فَالْعٰصِفٰتِ عَصْفًا ۙ﴿۲﴾

2. फिर तुन्दो तेज़ हवाओं की क़सम जो शदीद झोंकों से चलती हैं।

وَّالنّٰشِرٰتِ نَشْرًا ۙ﴿۳﴾

3. और उनकी क़सम जो बादलों को हर तरफ़ फैला देती हैं।

فَالْفٰرِقٰتِ فَرْقًا ۙ﴿۴﴾

4. फिर उनकी क़सम जो (उन्हें) फाड़ कर जुदा जुदा कर देती हैं।

فَالْمُلْقِيٰتِ ذِكْرًا ۙ﴿۵﴾

5. फिर उनकी क़सम जो नसीह़त लाने वाले हैं।

عُذْرًا اَوْ نُذْرًا ۙ﴿۶﴾

6. हुज्जत तमाम करने या डराने के लिए।

اِنَّمَا تُوْعَدُوْنَ لَوَاقِعٌ ؕ﴿۷﴾

7. बेशक जो वा'दए (क़ियामत) तुम से किया जा रहा है। वोह ज़रूर पूरा हो कर रहेगा।

فَاِذَا النُّجُوْمُ طُمِسَتْ ۙ﴿۸﴾

8. फिर जब सितारों की रौशनी ज़ाइल कर दी जाएगी।

وَاِذَا السَّمَآءُ فُرِجَتْ ۙ﴿۹﴾

9. फिर जब आस्मानी काइनात में शिगाफ़ हो जाएंगे।

وَاِذَا الْجِبَالُ نُسِفَتْ ۙ﴿۱۰﴾

10. और जब पहाड़ (रेज़ा रेज़ा करके (उड़ा दिए जाएंगे।

وَاِذَا الرُّسُلُ اُقِّتَتْ ؕ﴿۱۱﴾

11. और जब पयग़म्बर वक़्ते मुक़र्ररह पर(अपनी अपनी उम्मतों पर गवाही के लिए) जमा' किए जाएंगे।

لِاَيِّ يَوْمٍ اُجِّلَتْ ؕ﴿۱۲﴾

12 भला किस दिन के लिए (इन सब उमूर की)मुद्दत मुकर्रर की गई है।

لِيَوْمِ الْفَصْلِ ۚ﴿۱۳﴾

13. फ़ैसले के दिन के लिए।

وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا يَوْمُ الْفَصْلِ ؕ﴿۱۴﴾

14. और आपको किसने बताया के फैसले का दिन क्या है।

وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿۱۵﴾

15.उस दिन झुटलानेवालों के लिए ख़राबी (व तबाही) है।

اَلَمْ نُهْلِكِ الْاَوَّلِيْنَ ؕ﴿۱۶﴾

16. क्या हमने अगले (झुटलानेवाले) लोगों को हलाक नहीं कर डाला था।

ثُمَّ نُتْبِعُهُمُ الْاٰخِرِيْنَ ﴿۱۷﴾

17. फिर हम बाद के लोगों को भी (हलाकत में) उनके पीछे चलाए देते हैं।

كَذٰلِكَ نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِيْنَ ﴿۱۸﴾

18. हम मुजरिमों के साथ इसी तरह (का मुआमला) करते हैं।

وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿١٩﴾

19. उस दिन झुटलानेवालों के लिए ख़राबी है।

اَلَمْ نَخْلُقْكُّمْ مِّنْ مَّآءٍ مَّهِيْنٍ ﴿٢٠﴾ لا

20. क्या हमने तुम्हें हक़ीर पानी (की एक बूंद) से पैदा नहीं किया।

فَجَعَلْنٰهُ فِيْ قَرَارٍ مَّكِيْنٍ ﴿٢١﴾ لا

21. फिर उसको महफ़ूज़ जगह (या'नी रहमे मादर) में रख्खा।

اِلٰى قَدَرٍ مَّعْلُوْمٍ ﴿٢٢﴾ لا

22. (वक़्त के)एक मुअ़य्यन अन्दाज़े तक।

فَقَدَرْنَا ۟ فَنِعْمَ الْقٰدِرُوْنَ ﴿٢٣﴾

23. फिर हमने (नुत्फ़े से तवल्लुद तक तमाम मराहिल के लिए) वक़्त के अंदाज़े मुक़र्रर किए, पस (हम) किया ही खूब अंदाज़े मुक़र्रर करनेवाले हैं।

وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٢٤﴾

24 उस दिन झुटलानेवालों के लिए बड़ी तबाही है।

اَلَمْ نَجْعَلِ الْاَرْضَ كِفَاتًا ﴿٢٥﴾ لا

25. क्या हमने ज़मीन को समेटनेवाली नहीं बनाया।

اَحْيَآءً وَّاَمْوَاتًا ﴿٢٦﴾ لا

26. (जो समेटती है)ज़िन्दों को (भी) और मुर्दोंको(भी)।

وَّجَعَلْنَا فِيْهَا رَوَاسِيَ شٰمِخٰتٍ وَّاَسْقَيْنٰكُمْ مَّآءً فُرَاتًا ﴿٢٧﴾ ط

27. हमने उस पर बुलन्दो मज़बूत पहाड़ रख दिए और हमने तुम्हें (शीरीं चश्मों के ज़रीए) मीठा पानी पिलाया।

وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٢٨﴾

28. उस दिन झुटलाने वालों के लिए बड़ी बरबादी होगी।

اِنْطَلِقُوْٓا اِلٰى مَا كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ﴿٢٩﴾ ج

29.(अब) तुम उस (अज़ाब) की तरफ़ चलो जिसे तुम झुटलाया करते थे।

اِنْطَلِقُوْٓا اِلٰى ظِلٍّ ذِيْ ثَلٰثِ شُعَبٍ ﴿٣٠﴾ لا

30. तुम (दोज़ख़ के धुंवें पर मब्नी) उस साए की तरफ़ चलो।

لَّا ظَلِيْلٍ وَّلَا يُغْنِيْ مِنَ اللَّهَبِ ﴿٣١﴾ ط

31. जो न (तो) ठंडा साया है और न ही आग की तपिश से बचाने वाला है।

اِنَّهَا تَرْمِيْ بِشَرَرٍ كَالْقَصْرِ ﴿٣٢﴾ ج

32. बेशक वोह (दोज़ख़) ऊंचे महल की तरह (बड़े बड़े) शोले और चिंगारिया उड़ाती हैं।

كَاَنَّهٗ جِمٰلَتٌ صُفْرٌ ﴿٣٣﴾

33. (यूं भी लगता है) गोया वोह (चिंगारियां) ज़र्द रंग वाले ऊंट हैं।

وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٣٤﴾

34. उस दिन झुटलानेवालों के लिए बड़ी तबाही है।

هٰذَا يَوْمُ لَا يَنْطِقُوْنَ ﴿٣٥﴾

35. येह ऐसा दिन है कि वोह (इसमें) बोल भी न सकेंगे।

وَلَا يُؤْذَنُ لَهُمْ فَيَعْتَذِرُوْنَ ﴿٣٦﴾

३६. और न ही उन्हें इजाज़त दी जाएगी कि वोह मा'ज़िरत कर सकें।

وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٣٧﴾

37. उस दिन झुटलानेवालों के लिए बड़ी हलाकत है।

هٰذَا يَوْمُ الْفَصْلِ ۚ جَمَعْنٰكُمْ وَالْاَوَّلِيْنَ ﴿٣٨﴾

38. येह फैसले का दिन है (जिसमें) हम तुम्हें और (सब) पेहले लोगों को जमा' करेंगे।

فَاِنْ كَانَ لَكُمْ كَيْدٌ فَكِيْدُوْنِ ﴿٣٩﴾

39. फिर अगर तुम्हारे पास (अ़ज़ाब से बचने का) कोई ह़ीला (और दांव) है तो (वोह) दांव मुझ पर चलो।

وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٤٠﴾ ع ١ ٢١

40. उस दिन झुटलानेवालों के लिए बड़ा अफ़्सोस है।

اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ ظِلٰلٍ وَّعُيُوْنٍ ﴿٤١﴾

41. बेशक परहेज़गार ठंडे सायों और चश्मों में (ऐशो राहत के साथ) होंगे।

وَّفَوَاكِهَ مِمَّا يَشْتَهُوْنَ ﴿٤٢﴾

42. और फल और मेवे जिसकी भी वोह ख़्वाहिश करेंगे (उनके लिए मौजूद होंगे)।

كُلُوْا وَاشْرَبُوْا هَنِيْٓـًٔا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٤٣﴾

43. (उनसे कहा जाएगा :) तुम खूब मज़े से खाओ और पियो उन आ'माले (सालेहा) के इ़वज़ जो तुम रते रहे थे।

اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٤٤﴾

44. बेशक हम इसी तरह़ नेकू कारों को जज़ा दिया करते हैं।

وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٤٥﴾

45. उस दिन झुटलानेवालों के लिए बड़ी खराबी है।

كُلُوْا وَتَمَتَّعُوْا قَلِيْلًا اِنَّكُمْ مُّجْرِمُوْنَ ﴿٤٦﴾

46. (ऐ ह़क़ के मुन्किरों !)तुम थोड़ा अ़र्सा खा लो और फ़ाइदा उठा लो, बेशक तुम मुजरिम हो।

وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٤٧﴾

47. उस दिन झुटलानेवालों के लिए बड़ी ख़राबी है।

وَ اِذَا قِيْلَ لَهُمُ ارْكَعُوْا لَا يَرْكَعُوْنَ ﴿٤٨﴾

48. और जब उनसे कहा जाता है कि तुम (अल्लाह के हुज़ूर) झुको तो वोह नहीं झुक्ते।

وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٤٩﴾

49. उस दिन झुटलानेवालों के लिए बड़ी तबाही है।

فَبِاَيِّ حَدِيْثٍ بَعْدَهٗ يُؤْمِنُوْنَ ﴿٥٠﴾ ع ٢ ١٠ ٢٢

50. फिर वोह इस (क़ुरआन) के बाद किस कलाम पर ईमान लाएंगे।